श्री रक्षाबंधन विधान

रचयिता

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य

अनेक विधान रचयिता, बुंदेली संत

मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना

कृति	:	श्री रक्षाबंधन विधान
आशीर्वाद	:	आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागरजी महाराज नवाचार्य श्री समयसागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज
प्रसंग	:	नवाचार्य श्री समयसागरजी महाराज का आचार्य पदारोहण १६ अप्रेल २०२४, कुण्डलपुर
संयोजक	:	बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना
संस्करण	:	तृतीय, 1100 प्रतियाँ
सहयोग राशि	:	50/- (पुनः प्रकाशन हेतु)
प्रकाशक	:	विद्या सुव्रत संघ
प्राप्ति स्थान	:	१. बा॰ ब्र॰ संजय भैयाजी, मुरैना Mob.-9425128817 २. अमर ग्रंथालय इंदौर, 9425478846
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल

पुण्यार्जक

श्री रमेशचंद-श्रीमती अनुराधा जैन

नितिन-श्रीमती विजेता, कुशाग्र, प्रेक्षा जैन रामटेक

डॉ सचिन-श्रीमती पारुल, सम्यक, निश्चय जैन रामटेक (USA)

श्रीमती डॉ रश्मि-डॉ ललित, संचित, मधुर जैन नागपुर

श्रीमती दीप्ति-नरेन्द्र, प्रशम, निर्जरा जैन दमोह

एवं समस्त रामटेक परिवार

कृति के संदर्भ में

जब बड़ेबाबा का विधान भक्तों के हाथों में भक्ति अर्चना हेतु उपलब्ध हुआ तो लोगों को ज्ञात हुआ कि मैं लिखता भी हूँ, तब लोगों ने मुझसे कहा कि आप रक्षाबंधन का एक दिवसीय विधान अवश्य बनाइएगा तब मैंने कहा जरुर बनाऊँगा, पर समस्या थी नाम की। फिर धीरे-धीरे यह विचार बना कि नाम तो नहीं मिल पायेंगे पर ७०० विशेषणों से मुनि मंत्र बनाकर विधान सम्पन्न किया जा सकता है। बस इसी भावना के अन्तर्गत इस कृति का अवतार हुआ है।

इस विधान में जो अर्घ्य बनाये हैं, वे सामान्य से मुनियों के गुणगान के समय उपयोग कर सकते हैं तथा आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागरजी महाराज के द्वारा दीक्षित १३१ मुनियों के नामों को भी आधार बना करके कुछ अर्घ्य बनाये हैं। बीच-बीच में स्वाध्याय सम्बन्धी विषयों का भी समावेश अपनी अल्पमति से करने का प्रयास किया है।

मैंने पूरा प्रयास किया है कि विधान छोटा हो पर मैं अल्पज्ञ होने से ज्यादा सफलता प्राप्त नहीं कर सका, पर फिर भी भक्तिवशात् कार्य किया है। इस कार्य में ब्र. संजय मुरैना ने प्रकाशन तक पहुँचाकर अपूर्व सहयोग किया है। सभी को बहुत-बहुत आशीर्वाद।

भक्त भक्ति की वात्सल्य गंगा में नहा के अपने तन, मन और आत्मा को पावन बनाये तथा आपसी राग-द्वेष को भूलकर मैत्री के सूत्र में बंधे इसी भावना के साथ अपने गुरुवर के चरणों में नमोऽस्तु करते हुए....

ग्रंथ रहित मुझको करो, हे गुरुवर निर्ग्रन्थ।
मैं भी शिवपंथी बनूँ, दिखला दो वह पन्थ॥

- मुनि सुव्रतसागर

अन्तर्भाव

श्री रक्षाबंधन पर्व मुनिराजों के वात्सल्य, श्रावकों की भक्ति एवं प्रभावना का पर्व है। वर्तमान में इस पर्व का विशेष महत्त्व है, इस पर्व से श्रावक एवं मुनिराजों के बीच जो भक्ति के सेतु का निर्माण होता है, उस पर चलकर मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है। अभी तक रक्षाबंधन पर्व परम्परानुसार औपचारिक रूप में ही सम्पन्न करते आ रहे थे। प्रातः स्मरणीय आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के काव्य प्रतिभा से सम्पन्न सुयोग्य शिष्य परम पूज्य मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज ने श्री रक्षाबंधन विधान का सृजन करके हम श्रावकों पर परम उपकार किया है।

७०० मुनिराजों के नाम जैनागम में कहीं उपलब्ध नहीं होते, ऐसी स्थिति में उनकी भक्ति उनके नाम से कैसे की जाए ? इसलिए मुनि श्री ने इस विधान में पाँच महाव्रत धारी, मंत्रधारक, आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान के त्यागी आदि ७०० विशेषणों पर आधारित नामों का चयन किया है। इस विधान में मुनिराजों की चर्या का विशेष वर्णन है, वहीं विशेष अलंकारों का भी प्रयोग है। मुनि श्री की स्वयं छन्द निर्माण करने की कला, उन्हीं नवीन छन्दों के माध्यम से मुनिराज के गुणों का विवेचन भी उत्कृष्ट काव्य शैली का परिचायक है।

इस विधान को हम मात्र २-३ घंटे में ही सम्पादित कर सकते हैं। जाप अनुष्ठान समाज के सभी लोगों को अवश्य करना चाहिए। जाप का संकल्प जापकर्त्ताओं की संख्यानुसार होना चाहिए। यदि जाप अनुष्ठानपूर्वक विधान करें तो हवन के पश्चात् समाज के सभी धार्मिक जन धर्मायतनों के संरक्षण हेतु दान राशि समर्पित करें साथ ही प्रत्येक श्रावक-श्राविका को विधान के माध्यम से जिनायतनों एवं चतुर्विध संघ के प्रति श्रद्धा भाव जागृत हो तथा संकल्पसूत्र बाँधकर उनके संरक्षण का संकल्प करके विधान का समापन करें।

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के पावन चरण कमलों में नमोऽस्तु करते हुए, एक नया पुष्प श्री रक्षाबंधन विधान उनके पूज्य पावन कर कमलों में सादर समर्पित.....

– बा॰ ब्र॰ संजय, मुरैना

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शान्ति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, एसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व-पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥ तेरा...
जिन माँ बापू ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥ तेरा...
जो धरती नभ आश्रय देते, उनका मंगल होवे।
जिस जलवायु से जीते हैं, उसका मंगल होवे॥
जिस अग्नि से जीवन चलता, उसका मंगल होवे।
जिन तरुओं से भोजन मिलता, उनका मंगल होवे॥३॥तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥४॥ तेरा...

===

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहंत सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥
तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥

यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के कांटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिराएँ, सब पाप हमीं पर थोपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥
अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहंत प्यारे, हमें तारते सो नमोस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥१॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥२॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥३॥
सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥४॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥५॥
यही देवता हैं नवो पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥६॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोस्तु सदा ही इन्हें हो॥७॥
हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवो देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहंत फिर सिद्ध हम भी॥८॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥९॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

अर्घ्यावली

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अर्हंतों बिन जिन बिम्बों से, धर्म ध्यान हम करते हैं।
बिम्ब बिना चैत्यालय सुन लो, भक्त न पूजा करते हैं॥
अर्घ्य चढ़ा के मंदिर पूजें, तारणतरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बन्धी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

विद्यमान बीसतीर्थंकर का अर्घ्य (दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ को, करें नमोऽस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

चौबीसी का अर्घ्य (अवतार)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

तीस चौबीसी का अर्घ्य (सखी)

नहिं केवल अर्घ्य चढ़ाने, नहिं श्रेष्ठ पदों को पाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी सम्बन्धी सप्तशत विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री वृषभनाथ स्वामी अर्घ्य (शुद्ध गीता)

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवी भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री चन्द्रप्रभ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आए हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाए हम॥
अष्टम वसुधा मिलती अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री शान्तिनाथ स्वामी अर्घ्य (शंभु)

है तीन लोक में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जड़ पुद्गल में।
है तीन काल में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जग दलदल में॥
अपने सम विघ्न अशान्ति हरो, अर्घों सी शान्ति करो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री नेमिनाथ स्वामी अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
प्रभु देख प्राणियों का क्रंदन, झट तजे राज राजुल बन्धन।
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी।
श्री नेमिप्रभु के....॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री पार्श्वनाथ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाए, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ा अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री महावीर स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

बाहुबली भगवान का अर्घ्य (शंभु)

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अम्बर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥
हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

सोलहकारण का अर्घ्य (आंचलीबद्ध चौपाई)

प्रासुक द्रव्य मिलाकर आठ, अर्घ्य बना करलें जिन पाठ।
करें कल्याण, पूजन कर पाएँ निर्वाण॥
भजें भावना सोलह रोज, तीर्थंकर पद की हो खोज।
बनें जिनराज, सो नमोऽस्तु कर पूजें आज॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचमेरू का अर्घ्य

पंचमेरू जिनशासन पर्व, भक्त चढ़ाके जिनको अर्घ्य।
करें त्यौहार, कर लें प्रभु सा निज उद्धार॥
पंचमेरू मंदिर जिन ईश, आठ हजार छह सौ चालीस।
भजें सुर लोग, कर नमोऽस्तु पूजें हम लोग॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

नंदीश्वर का अर्घ्य

यह अर्घ्य दिखे कमजोर, पर बलवान बड़े।
जो खींचे प्रभु की ओर, सो हम आन खड़े॥
हम दुख संकट लें जीत, निज पर राज करें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

दसलक्षण का अर्घ्य (सखी)

यह अर्घ्य चढ़ा हो जादू, झट धर्म बना दे साधु।
ले पिछी कमण्डल डोलें, पट मोक्षमहल के खोलें॥
दसलक्षण के केशरिया, हम रंग में रंगने आए।
पूजा में करके नमोऽस्तु, दस धर्म मनाने आए॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

रत्नत्रय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

उपसर्गों से परीषहों से, डरकर रत्नत्रय न लिया।
हीरे जैसा मानव जीवन, कौड़ी जैसा गवां दिया॥
जड़ द्रव्यों के विकल्प तज के, चेतन धाम मिले हमको।
सो यह अर्घ्य करें हम अर्पित, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनवाणी का अर्घ्य (त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, दे के भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदैव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सप्तर्षि का अर्घ्य (दोहा)

श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय, सर्वसुन्दर जयवान।
विनयलालस जयमित्रजी, भजें सप्तऋषि नाम॥

ॐ ह्रीं श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय सर्वसुन्दर जयवान विनयलालस जयमित्राख्य-चारणऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं...।

निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य (शुद्ध गीता)

उसी मय आत्मा होती, जिसे जो चाहते मन से।
किया जब ध्यान सिद्धों का, मिले सो सिद्ध भगवन से॥
करें शुद्धात्म सिद्धों सम, अतः यह अर्घ्य अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री सम्मेदशिखर का अर्घ्य (शंभु)

सम्मेदशिखर का तीरथ तो, सब तीर्थों का ही सार रहा।
सो इसकी तीर्थ वन्दना बिन, हम समझें सब निस्सार रहा॥
अब अर्घ्य चढ़ा हर टोंकों को, कर परिक्रमा निज खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री समयसागरजी महाराज का अर्घ्य (शंभु)

आचार्य श्री के लघुनंदन, पहले निर्यापक श्रमण मुनि।
जो मूलाचार निभाकर के, श्री समयसार से आत्म गुणी॥
श्री शांति वीर शिव ज्ञान तथा, विद्यागुरु जैसे श्रद्धालय।
इसलिए नमोस्तु कर बोलें, आचार्य समयसागर की जय॥

ॐ ह्रूं नवाचार्य श्री समयसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, सुव्रत दान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सिद्धभक्ति (प्राकृत गाथा)

असरीरा जीवघणा, उवजुत्ता दंसणेय णाणेय।
सायार मणायारा, लक्खणमेयं तु सिद्धाणं॥१॥
मूलोत्तर पयडीणं, बंधोदयसत्त-कम्म उम्मुक्का।
मंगलभूदा सिद्धा, अट्ठगुणा तीद संसारा॥२॥
अट्ठ वियकम्म वियला, सीदीभूदा णिरंजणा णिच्चा।
अट्ठ गुणा किदकिच्चा, लोयग्गणिवासिणो सिद्धा॥३॥
सिद्धा णट्ठट्ठ मला, विसुद्ध बुद्धीय लद्धि सब्भावा।
तिहुअणसिर-सेहरया, पसियंतु भडारया सव्वे॥४॥
गमणागमण विमुक्के, विहडियकम्मपयडि संघारा।
सासह सुह संपत्ते, ते सिद्धा वंदिमो णिच्चं॥५॥
जय मंगल भूदाणं, विमलाणं णाणदंसणमयाणं।
तइलोइसेहराणं, णमो सया सव्व सिद्धाणं॥६॥
सम्मत्त-णाणदंसण-वीरिय सुहुमं तहेव अवगहणं।
अगुरुलघु मव्वावाहं, अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं॥७॥
तवसिद्धे णयसिद्धे, संजमसिद्धे चरित्तसिद्धे य।
णाणम्मि दंसणम्मि य, सिद्धे सिरसा णमस्सामि॥८॥

इच्छामि भंते! सिद्धभत्तिकाउस्सग्गोकओ तस्सालोचेउं सम्मणाण सम्मदंसण सम्मचरित्त जुत्ताणं अट्ठविह कम्म-विप्पमुक्काणं अट्ठगुण-संपण्णाणं उड्ढलोयमत्थयम्मि पइट्ठियाणं तवसिद्धाणं णयसिद्धाणं संजमसिद्धाणं चरित्त-सिद्धाणं अतीदाणागद-वट्टमाणकालत्तय सिद्धाणं सव्व-सिद्धाणं सया णिच्चकालं अंचेमि पुज्जेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगइगमणं समाहि-मरणं जिणगुणसम्पत्ति होउ मज्झं।

मंगलाचरण

(जोगीरासा)

ओम् नमः सिद्धेभ्यः-४

तीन लोक में तीन काल में, सभी द्रव्य क्षेत्रों में।
सब गतियों में हर योनि में, दुश्मन या मित्रों में॥
मानव एक अकेला प्राणी, उत्सव प्रेमी होता।
तरह-तरह के पर्व मनाकर, तरह-तरह खुश होता॥१॥

ओम् नमः सिद्धेभ्यः-४

पारिवारिक सामाजिक या, देश पर्व जो न्यारे।
शास्वत या नैमित्तिक उत्सव, धार्मिक पर्व हमारे॥
दीपावली दशहरा होली, रक्षाबंधन पर्व सभी।
नैमित्तिक यह उत्सव अपने, देते खुशियाँ हर्ष सभी॥२॥

ओम् नमः सिद्धेभ्यः-४

श्री आचार्य अकम्पन गुरुवर, विष्णुकुमार मुनि प्यारे।
और संघ में मुनि सात सौ, धार्मिक दीप दुलारे॥
रक्षाबंधन कैसे पाया, सुनिए कथा कहानी।
प्रेम भक्ति वात्सल्य पर्व की, गाथा धर्म निशानी॥३॥

ओम् नमः सिद्धेभ्यः-४

रक्षाबंधन पर्व हमारा, सबसे रहा निराला।
जो श्रद्धा मजबूत बनाता, अमृत देने वाला॥
अतः प्रेम का धागा बाँधो, सारे बैर भुला के।
घर-घर पर्व मनायें प्राणी, गुरु के चरण धुलाके॥४॥

ओम् नमः सिद्धेभ्यः-४

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
मुनिराजों को करके नमोस्तु, जग का मंगल होवे॥

ओम् नमः सिद्धेभ्यः-४

(पुष्पांजलिं...)

===

श्री रक्षाबन्धन विधान

स्थापना (दोहा)

रक्षाबंधन पर्व का, करते कुछ गुणगान।
शक्ति मिले वात्सल्य भी, बढ़े धर्म की शान॥

(ज्ञानोदय)

जिन आचार्य अकंपन गुरु का, संघ सात सौ मुनियों का।
हस्तिनागपुर के उपवन में, हुआ विराजित गुणियों का॥
पूर्व बैर से राजा बलि ने, यज्ञ रचा उपसर्ग किया।
आतम साधक गुरु शिष्यों ने,मौन अचल सब सहन किया॥
दौड़े विष्णुकुमार महामुनि, ज्यों जाने उपसर्ग कथा।
निजी विक्रिया ऋद्धि द्वारा, शीघ्र दिया उपसर्ग हटा॥
श्रावण पूनम को मुनियों का, सुखी धन्य आहार हुआ।
रक्षासूत्र बाँध गृहस्थों ने, वत्सलता का द्वार छुआ॥

ॐ ह्रूं श्री विष्णुकुमार एवं अकंपनाचार्यादि सप्तशतक मुनि समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननं ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ! अत्र मम भव भव-वषट् सन्निधिकरणं। (पुष्पाञ्जलिं)

प्रासुक जल यह अर्पित करके, जनम मरण हम ना चाहें।
जिसकी औषध रत्नत्रय दे, हरो हमारी भी आहें॥
मुनि आचार्य अकंपन आदिक, सात-शतक उपसर्गजयी।
हम पूजें उपसर्ग निवारक, वत्सल विष्णुकुमार गुणी॥

ॐ ह्रूं श्री विष्णुकुमार एवं अकंपनाचार्यादि सप्तशतक मुनि समूह जलं ...।

चन्दन द्वारा वन्दन करके, भवाताप हम ना चाहें।
करुणा रस की वर्षा करके, हरलो तम मन की दाहें॥
मुनि आचार्य अकंपन आदिक, सात-शतक उपसर्गजयी।
हम पूजें उपसर्ग निवारक, वत्सल विष्णुकुमार गुणी॥

ॐ ह्रूं श्री विष्णुकुमार एवं अकंपनाचार्यादि सप्तशतक मुनि समूह चंदनं ...।

अखण्ड तन्दुल अर्पित करके, कोई उपाधि ना चाहें।
मनोकामना जीत सकें हम, हमें दिखाओ शिवराहें॥
मुनि आचार्य अकंपन आदिक, सात-शतक उपसर्गजयी।

हम पूजें उपसर्ग निवारक, वत्सल विष्णुकुमार गुणी॥

ॐ ह्रूं श्री विष्णुकुमार एवं अकंपनाचार्यादि सप्तशतक मुनि समूह अक्षतान्..।

कोमल पुष्पक अर्पित करके, काम बाण हम ना चाहें।
ब्रह्मचर्य पालन सिखलाके, संज्ञाएँ सब छुड़वायें॥
मुनि आचार्य अकंपन आदिक, सात-शतक उपसर्गजयी।
हम पूजें उपसर्ग निवारक, वत्सल विष्णुकुमार गुणी॥

ॐ ह्रूं श्री विष्णुकुमार एवं अकंपनाचार्यादि सप्तशतक मुनि समूह पुष्पं ...।

सरस मधुर नैवेद्य चढ़ा के, क्षुधारोग हम ना चाहें।
समतारस का पान कराके, हरो भोग की ज्वालायें॥
मुनि आचार्य अकंपन आदिक, सात-शतक उपसर्गजयी।
हम पूजें उपसर्ग निवारक, वत्सल विष्णुकुमार गुणी॥

ॐ ह्रूं श्री विष्णुकुमार एवं अकंपनाचार्यादि सप्तशतक मुनि समूह नैवेद्यं ...।

करें आरती इन दीपों से, मोहतिमिर हम ना चाहें।
सम्यग्ज्ञान दीप जलवाके, हरलो मिथ्या अफवाहें॥
मुनि आचार्य अकंपन आदिक, सात-शतक उपसर्गजयी।
हम पूजें उपसर्ग निवारक, वत्सल विष्णुकुमार गुणी॥

ॐ ह्रूं श्री विष्णुकुमार एवं अकंपनाचार्यादि सप्तशतक मुनि समूह दीपं ...।

धूप सुगन्धी अर्पित करके, अष्ट कर्म मल ना चाहें।
संयम का सौरभ महका कर, हरो असंयम की बाहें॥
मुनि आचार्य अकंपन आदिक, सात-शतक उपसर्गजयी।
हम पूजें उपसर्ग निवारक, वत्सल विष्णुकुमार गुणी॥

ॐ ह्रूं श्री विष्णुकुमार एवं अकंपनाचार्यादि सप्तशतक मुनि समूह धूपं ...।

यथा शक्तिफल अर्पित करके, लौकिक फल हम ना चाहें।
सम्यक् तप से कर्म झड़ाने, गुरुपद सेवा हम चाहें॥
मुनि आचार्य अकंपन आदिक, सात-शतक उपसर्गजयी।
हम पूजें उपसर्ग निवारक, वत्सल विष्णुकुमार गुणी॥

ॐ ह्रूं श्री विष्णुकुमार एवं अकंपनाचार्यादि सप्तशतक मुनि समूह फलं ...।

भाव-भक्ति से अर्घ चढ़ा के, नश्वर वैभव ना चाहें।
रुक जाये भव भ्रमण हमारा, इस इच्छा से पद ध्यायें॥

मुनि आचार्य अकम्पन आदिक, सात-शतक उपसर्गजयी।
हम पूजें उपसर्ग निवारक, वत्सल विष्णुकुमार गुणी॥

ॐ ह्रूं श्री विष्णुकुमार एवं अकंपनाचार्यादि सप्तशतक मुनि समूह अर्घ्यं ...।

जयमाला

(दोहा)

सहने वाले धन्य हैं, धन्य निवारक सन्त।
अब जयमाला से कहें, धर्म कथा जिन पन्थ॥

(ज्ञानोदय)

खूब सुनी वात्सल्य अंग की, महिमा अपरम्पार कही।
अखिल विश्व मैत्री का साधन, धर्मी सा उपकार नहीं॥
दूर हुआ उपसर्ग तभी से, रक्षाबन्धन मना रहे।
पर सोचो उपसर्ग धर्मपर, क्यों आते ? क्यों सता रहे ?॥ १॥
इसका कारण ऐसे लगता, धर्म विमुख हम दौड़ रहे।
थोथी शान मान के कारण, आडम्बर हम ओढ़ रहे॥
प्रेम, दया, वात्सल्य अंग या, धर्म अहिंसा की बातें।
मात्र पुराणों तक सीमित हैं, सदाचार की सौगातें॥ २॥
क्रिया-धर्म की भार हो गयीं, पर्व हुए सिर दर्द हमें।
तभी प्रेम विश्वास गमाकर, दुनियाँ लगती दर्द हमें॥
दुनियाँ उन इंसानों की है, जिनके उर में प्रेम भरा।
धर्म दया सेवा से सनकर, कूट-कूट सुख क्षेम भरा॥ ३॥
आओ इस पावन उत्सव पर, मिलकर हम संकल्प करें।
दया धर्म का बिगुल बजाकर, जीवों के दुख दर्द हरें॥
देव शास्त्र गुरुओं की आज्ञा, पालें सादे जीवन में।
उच्च विचारों की धरती पर, बोयें धर्म बीज मन में॥ ४॥
बीज अंकुरित होने पर जब, सरस मधुर फल पायेंगे।
विश्व शांति हो घर-घर खुशियाँ, फिर उपसर्ग न आयेंगे।
हर दिन होगा पर्व सरीखा, जय-जय तब गुँजित होगी।
हर जन के मन में फिर 'सुव्रत', प्रेम मूर्ति अंकित होगी॥ ५॥

(दोहा)

रक्षाबंधन या कहो, पर्व सलूना नाम।
जीव प्रेम वात्सल्य का, यही अनूठा धाम॥
सर्व पर्व में श्रेष्ठ ये, हरता मन के मैल।
कर निष्ठा मजबूत दे, भक्तों को शिव-गैल॥

ॐ ह्रूं विष्णुकुमार एवं अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक मुनिसमूह जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

आत्मसाधना संत की, करे विश्वकल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत गुरुनाम॥

(शांतिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पदलाय।
भव दुःखों को मेट दो, कर्म जयी मुनिराय॥

(पुष्पाञ्जलिं)

===

रक्षाबंधन विधान/सप्तशतक उपसर्ग विजेता मुनि अर्घ्यावली

(हाकलिका)

साधु दिगम्बर अपने ईश, धरें मूलगुण अट्ठाईस।
मुनि त्यौहार उजाले हैं, जिन्हें नमोस्तु हमारे हैं॥

ॐ ह्रः पर्व प्रदाता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१॥

पापों का जो त्याग रहा, व्रताचरण सौभाग्य कहा।
महाव्रतों के पालक जो, मुनिवर है सुखदायक वो॥

ॐ ह्रः पंच महाव्रत पालक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२॥

श्रेष्ठ महाव्रत पाँचों में, पूज्य अहिंसा लाखों में।
उसके पालक अनगारी, हरते हिंसा की मारी॥

ॐ ह्रः अहिंसा महाव्रत पालक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३॥

सत्य महाव्रत धरते जो, कलह व्यथा को हरते वो।
संत रूप में सत्य पले, उन्हें पूजने भक्त चले॥

ॐ ह्रः सत्य महाव्रत पालक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४॥

मन वच तन से चोरी को, त्यागा सीना जोरी को।
पूज्य अचौर्य महाव्रत धर, मुनिवर खोजें अपना घर॥

ॐ ह्रः अचौर्य महाव्रत पालक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५॥

नारी-जग से वैरागे, ब्रह्मचर्य से अनुरागे।
वही महाव्रत असिधारा, संत तारते भव खारा॥

ॐ ह्रः ब्रह्मचर्य महाव्रत पालक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६॥

दसविध बाह्य परिग्रह तज, और भीतरी चौदह तज।
अपरिग्रह महाव्रत धारी, छुड़वाओ दुनियाँ-दारी॥

ॐ ह्रः अपरिग्रह महाव्रत पालक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥७॥

पाँच समितियाँ मुनि पालें, आओ! मुनि के गुण गा लें।
सम्यक् चर्या समिति रही, पाप निरोधक सुमति वही॥

ॐ ह्रः पंच समिति पालक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥८॥

सूर्य प्रकाशित भू चलना, देख चार कर, पग रखना।
वही समिति ईर्या होती, हिंसा का दुख जो खोती॥

ॐ ह्रः ईर्या समिति पालक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥९॥

हित मित आगममय वाणी, संत कहें जग कल्याणी।
वही समिति भाषा मानी, जिसके पालक मुनि ज्ञानी॥

ॐ ह्रः भाषा समिति पालक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१०॥

आगम मय भोजन लेना, काया को भाड़ा देना।
वही एषणा समिति कही, दोष कोश तज चलें सुधी॥

ॐ ह्रः एषणा समिति पालक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥११॥

वस्तु उठाना या रखना, शयनासन विधिवत् करना।
निक्षेपण आदान वही, संत पालते समिति सही॥

ॐ ह्रः आदान निक्षेपण समिति पालक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१२॥

मल मूत्रादिक तन को जो, आगममय मुनि तजते जो।
वो उत्सर्ग समिति जानो, उसके पालक मुनि मानो॥

ॐ ह्रः व्युत्सर्ग समिति पालक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१३॥

पंचेन्द्रिय पर करें विजय, जिनशासन के साधु निलय।
भक्तों को देते आश्रय, आओ उनकी बोलें जय॥

ॐ ह्रः पंचेन्द्रिय विषय विजेता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१४॥

षट् आवश्यक मुनि पालें, आओ उनके गुण गा लें।
भक्तों को देते आश्रय, आओ उनकी बोलें जय॥

ॐ ह्रः षट्-आवश्यक पालक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१५॥

शेष सात गुण मुनि पालें, आओ उनके गुण गा लें।
भक्तों को देते आश्रय, आओ उनकी बोलें जय॥

ॐ ह्रः शेष सात गुणी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१६॥

पाप क्रियाओं से अपनी, रक्षा करना आतम की।
वही गुप्ति हैं अघहर हैं, ध्यान समय जब मुनिवर हैं॥

ॐ ह्रः त्रय गुप्ति पालक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१७॥

सभी भाव जो मन चाहे, त्याग दिए वो अनचाहे।
मनोगुप्ति वह थिर मन है, पाले मुनि आतम धन है॥

ॐ ह्रः मनो गुप्ति पालक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१८॥

वचनों की जो शुभ माला, बढ़ा रही दुख जंजाला।
अगर पूर्णतः शान्त वही, वचन गुप्ति वह संत कही॥

ॐ ह्रः वचन गुप्ति पालक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१९॥

शुभ चेष्टायें काया की, रुक जाये अघ माया की।
वही गुप्ति काया वाली, संत पाल दें खुशहाली॥

ॐ ह्रः काय गुप्ति पालक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२०॥

(सुविद्या)

सभी समागत कष्टों को जो, सहते समता धार।
परिषह जय वह कर्म रहा है, मुनियों का शृंगार॥

ॐ ह्रः परिषह विजयी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२१॥

आगममय यदि मिले न भोजन, तो भी समता धार।
ज्ञान ध्यान में फिर भी रत जो, उनको नमन हमार ॥

ॐ ह्रः क्षुधा परिषह विजयी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२२॥

जब प्रतिकूल हुआ भोजन या, पड़े ग्रीष्म की मार।
तो भी सहें पिपासा मुनिवर, संतोषामृत धार॥

ॐ ह्रः पिपासा परिषह विजयी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२३॥

शीत लहर को शान्त भाव से, सहन करें मुनि लोग।
ज्ञानभावना के मन्दिर में, धरें निरम्बर योग॥

ॐ ह्रः शीत परिषह विजयी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२४॥

ग्रीष्म काल में रवि किरणों ने, जला दिया संसार।
ग्रीष्म जनित पीड़ा मुनि सहते, करते ना प्रतिकार॥

ॐ ह्रः उष्ण परिषह विजयी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२५॥

उपघातक सब प्राणीजन का, सहते मुनि उपघात।
दंशमशक नामक परिषह जय, कर्त्ता को नत माथ॥

ॐ ह्रः दंशमशक परिषह विजयी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२६॥

यथाजात बालकवत् रहकर, तजें याचना कार्य।
वसन वासना तजे नग्न हो, ब्रह्मचर्य धर आर्य॥

ॐ ह्रः नाग्न्य परिषह विजयी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२७॥

पंचेन्द्री के इष्ट विषय तज, ज्ञान ध्यान तप लीन।
काम भोग की छोड़ कथायें, मुनिवर सदय प्रवीण॥

ॐ ह्रः अरति परिषह विजयी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२८॥

समद नारियाँ कामबाणमय, करें मन्द मुस्कान।
कछुए जैसी करें इन्द्रियाँ, मुनिमन ना व्यवधान॥

ॐ ह्रः स्त्री परिषह विजयी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२९॥

देशान्तर भोजन आदिक को, अतिथि गया बन सन्त।
पदयात्री आने जाने की, सहते पीर महन्त॥

ॐ ह्रः चर्या परिषह विजयी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३०॥

वन उपवन में देख जानकर, बैठे सन्त महान।
जय उपसर्ग चलित नाआसन, विजय निषद्या जान॥

ॐ ह्रः निषद्या परिषह विजयी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३१॥

गुणधर थक कर मुनि आगममय, चाहें शय्या धाम।
जीव दया उपसर्ग सहन को, मुर्देवत् विश्राम॥

ॐ ह्रः शय्या परिषह विजयी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३२॥

क्रोध अनल भड़काने वाले, दुर्जन वचन कठोर।
संत कर्मफल कहें निजी पर, चित्त न दें उस ओर॥

ॐ ह्रः आक्रोश परिषह विजयी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३३॥

पैने अस्त्र शस्त्र आदिक से, ताड़ित पीड़त देह।
किन्तु संत चूं तक ना करते, चेतन शाश्वत येह॥

ॐ ह्रः वध परिषह विजयी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३४॥

तप से क्षीण देह कुछ माँगे, धाम दवा आहार।
किन्तु प्राण संदेह तलक मुनि, तजें याचना भार॥

ॐ ह्रः याचना परिषह विजयी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३५॥

एक काल दिन में भोजन को, कर-पात्री स्वीकार।
आगममय यदि नहीं मिले तो, समझे तप-हितकर॥

ॐ ह्रः अलाभ परिषह विजयी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३६॥

रोग हजारों तन में उपजें, फिर भी ना प्रतिकार।
परिषह रोग विजय करके मुनि, करे कर्म संहार॥

ॐ ह्रः रोग परिषह विजयी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३७॥

चर्या शय्या तथा निषद्या, इनमें दया सँभाल।
तन में तृण आदिक चुभने पर, मुनि को नहीं मलाल॥

ॐ ह्रः तृणस्पर्श परिषह विजयी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३८॥

अपने तन में संचित मल को, मुनि करते ना दूर।
कर्म पंक रत्नत्रय जल से, धोते साँचे सूर॥

ॐ ह्रः मल परिषह विजयी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३९॥

ज्ञानी ध्यानी पूज्य तपस्वी, चाहें ना सम्मान॥
पुरस्कार सत्कार नाम से, जिन्हें न कोई काम॥

ॐ ह्रः सत्कार-पुरस्कार परिषह विजयी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४०॥

चारों अनुयोगों का ज्ञाता, मुझ जैसा ना और।
करते प्रज्ञा का निरसन जो, संत हमारी ठौर॥

ॐ ह्रः प्रज्ञा परिषह विजयी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४१॥

परिषह जय उपसर्ग सहे पर, ज्ञान हुआ न विशेष।
परिषह वो अज्ञान सहन कर, बनते पूज्य महेश॥

ॐ ह्रः अज्ञान परिषह विजयी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४२॥

मैं वैरागी बना दिगम्बर, अतिशय मिला न सार।
तो भी दीक्षा व्यर्थ न समझें, सहते परमत मार॥

ॐ ह्रः अदर्शन परिषह विजयी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४३॥

कुल बाबीस जिन्हें माना है, परिषह दुख का जाल।
एक साथ उन्नीस हुए सब, विजयी मुनि के हाल॥

ॐ ह्रः अधिकतम परिषह विजयी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४४॥

मोक्ष महा पथ चले निरन्तर, कर्म निर्जरा अर्थ।
समताधर परिषह सहते हैं, मुनिवर जी बिन शर्त॥

ॐ ह्रः कर्म निर्जरार्थ परिषह विजयी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४५॥

(चौपाई)

प्रकृति कृत उपसर्ग विजेता, कहलाते शिवपथ के नेता।
वो ही हमको विजय दिलायें, नमोऽस्तु करके अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रः प्रकृतिकृत उपसर्ग विजेता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४६॥

तिर्यंचों के बहु दुख दाता, जो उपसर्ग सहें मुनि ज्ञाता।
आओ उनकी कथा सुनायें, नमोऽस्तु करके अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रः तिर्यञ्चकृत उपसर्ग विजेता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४७॥

मानवकृत उपसर्ग हुआ ज्यों, दुख ने अपना हृदय छुआ त्यों।
रक्षाबंधन पर्व मनायें, नमोऽस्तु करके अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रः मानवकृत उपसर्ग विजेता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४८॥

जो उपसर्ग देव जन करते, राग द्वेष के वश हो करते।
देवों के उपसर्ग मिटायें, नमोऽस्तु करके अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रः देवकृत उपसर्ग विजेता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४९॥

चार-चार उपसर्ग जिन्होंने, जीत लिये सब कर्म जिन्होंने।
उपसर्गों की कथा नशाएँ, नमोऽस्तु करके अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रः चतुउपसर्ग विजेता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५०॥

सदा भावना बारह ध्याते, निज पर के वे कष्ट नशाते।
ये ही बारह भावना भाएँ, नमोऽस्तु करके अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रः बारह भावनारत मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५१॥

जग शाश्वत है सदा रहेगा, पर सब कुछ ना सदा रहेगा।
यथाजात मुनिराज सुहाएँ, नमोऽस्तु करके अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रः अनित्य भावनारत मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५२॥

जग में कुछ भी काम न आये, मरने से न कोई बचाये।
देव धर्म गुरु शरणा पायें, नमोऽस्तु करके अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रः अशरण भावनारत मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५३॥

पाँच-पाँच परिवर्तन वाला, यह संसार चक्र दुखशाला।
यों संसार भावना भाएँ, नमोऽस्तु करके अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रः संसार भावनारत मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५४॥

कोई नहीं किसी के साथी, ये संसारी बस बाराती।
चलो अकेले बढ़ते जायें, नमोऽस्तु करके अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रः एकत्व भावनारत मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५५॥

मोह रूप जग मृग तृष्णा है, इसमें हमको ना फसना है।
यों अन्यत्व भावना भाएँ, नमोऽस्तु करके अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रः अन्यत्व भावनारत मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५६॥

सदा अपावन नवमल द्वारी, काया में रमते संसारी।
ये ही अशुचि भावना भाएँ, नमोऽस्तु करके अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रः अशुचि भावनारत मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५७॥

आस्त्रव के सब कारण छोड़े, संत निरास्रव शिवपथ ओढ़े।
ये ही आस्त्रव भावना भाएँ, नमोऽस्तु करके अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रः आस्त्रव भावनारत मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५८॥

व्रत संयम चारित्र निभाते, संत भावना संवर भाते।
ये ही संवर भावना भाएँ, नमोऽस्तु करके अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रः संवर भावनारत मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५९॥

जो है संवर सहित निर्जरा, रही भावना वही निर्जरा।
यही निर्जरा भावना भाएँ, नमोऽस्तु करके अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रः निर्जरा भावनारत मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६०॥

लोकालोक स्वरूप विचारो, कर्म नाशकर भटकन टारो।
ये ही लोक भावना भाएँ, नमोऽस्तु करके अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रः लोक भावनारत मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६१॥

कैसे हमने नरभव पाया, सार्थक इसको कौन बनाया ?
बोधिदुर्लभ भावना भाएँ, नमोऽस्तु करके अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रः बोधिदुर्लभ भावनरत मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६२॥

धर्म अहिंसा परमो धर्मः, राग द्वेष सब हर्त्ता कर्मा।
ये ही धर्म भावना भाएँ, नमोऽस्तु करके अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रः धर्म भावनारत मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६३॥

(दोहा)

तीर्थंकर बनकर जिन्हें, पाना है शिवधाम।
वो मुनि सोलह भावना, भाते उन्हें प्रणाम॥

ॐ ह्रः षोडश भावना भावक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६४॥

सम्यग्दर्शन के हरें, अवगुण जो पच्चीस।
दर्शनविशुद्धि भावना, भावक को नत शीश॥

ॐ ह्रः दर्शनविशुद्धि भावना भावक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६५॥

रखें विनय सम्पन्नता, सम्यग्दर्शन युक्त।
मोक्षमार्ग शिवद्वार वे, हमें करें भव मुक्त॥

ॐ ह्रः विनयसम्पन्नता भावना भावक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६६॥

व्रतशीलों को दोष बिन, पाले संत सुशील।
शीलव्रतानतिचार गुण, हमको दें सुख झील॥

ॐ ह्रः शीलव्रतानतिचार भावना भावक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६७॥

सदैव सम्यग्ज्ञान का, करते जो अभ्यास।
वही अभीक्षण ज्ञान का, है उपयोग सुवास॥

ॐ ह्रः अभीक्ष्णज्ञानोपयोग भावना भावक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६८॥

भोग देह संसार से, सदा रहें भयभीत।
गुणअभीक्ष्ण संवेग के, गायें साधक गीत॥

ॐ ह्रः अभीक्ष्णसंवेग भावना भावक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६९॥

यथाशक्ति जो त्याग कर, चारों देते दान।
उसके जैसा कौन है, जग में पूज्य महान॥

ॐ ह्रः यथाशक्ति त्याग भावना भावक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥७०॥

यथाशक्ति तप जो तपें, मोक्षमार्ग के योग्य।
संत प्रभावक मोक्ष को, पाने करें सुयोग्य॥

ॐ ह्रः यथाशक्ति तप भावना भावक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥७१॥

साधक जन पर आ गयीं, गर आपद दुर्भाग्य!
उन्हें हटाकर भक्ति से, साधु समाधि सुभाग्य॥

ॐ ह्रः साधुसमाधि भावना भावक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥७२॥

गुणी जनों की साधना, बनी रहे अनुकूल।
दूर करें प्रतिकूलता, सेवा करें समूल॥

ॐ ह्रः वैत्यावृत्यकरण भावना भावक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥७३॥

भक्ति सदा अर्हन्त की, करें समझ के भाग्य।
भवसागर को तैरने, साधक हैं सौभाग्य॥

ॐ ह्रः अर्हत् भक्ति भावना भावक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥७४॥

चरण शरण आचार्य की, पाकर हो गुणप्रीत।
कर्म-युद्ध को भक्ति से, लेते भविजन जीत॥

ॐ ह्रः आचार्य भक्ति भावना भावक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥७५॥

उपाध्याय की भक्ति है, मोती मम मन दीप।
घोर तिमिर अज्ञान को, वन्द्य संत शुभदीप॥

ॐ ह्रः बहुश्रुत भक्ति भावना भावक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥७६॥

शास्त्रभक्ति श्रद्धासहित, शीश विनय से टेक।
यथा साधना संत की, दीपक बने विवेक॥

ॐ ह्रः प्रवचन भक्ति भावना भावक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥७७॥

आवश्यक कर्तव्य का, यथासमय अनुपाल।
वही भावना नित करें, हरते संत मलाल॥

ॐ ह्रः आवश्यक अपरिहाणि भावना भावक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥७८॥

ज्ञान ध्यान आचरण से, मोक्षमार्ग का कार्य।
करें प्रचार-प्रसार जो, प्रभावना मुनि आर्य॥

ॐ ह्रः मार्गप्रभावना भावक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥७९॥

गौमाता जैसे करे, निज बछड़े से प्रेम।
सहधर्मी से त्यों सदा, प्रेम रखो हो क्षेम॥

ॐ ह्रः प्रवचन वात्सल्य भावना भावक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥८०॥

दसलक्षण मय धर्म ही, सुख की खान विशेष।
वंद्य धर्मधारी हुए, परम पूज्य परमेश॥

ॐ ह्रः उत्तम दशलक्षण धर्म धुरन्धर मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥८१॥

आतम का गुण है क्षमा, क्षमा धर्म का सार।
जो धारे उत्तम क्षमा, उन्हें नमन बहुवार॥

ॐ ह्रः उत्तम क्षमा धर्म धुरन्धर मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥८२॥

मृदुता का गुण जो धरें, वो मार्दव चितचोर।
उत्तम मार्दव के धनी, वन्दित हो चहुँ ओर॥

ॐ ह्रः उत्तम मार्दव धर्म धुरन्धर मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥८३॥

भाव सरलता जो रहा, आर्जव उसका नाम।
उत्तम आर्जव धर्म के, धारी तुम्हें प्रणाम॥

ॐ ह्रः उत्तम आर्जव धर्म धुरन्धर मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥८४॥

शुचिता का जो भाव है, शौच धर्म संतोष।
धर्मी उत्तम शौच के, भरे पुण्य मम कोश॥

ॐ ह्रः उत्तम शौच धर्म धुरन्धर मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥८५॥

उत्तम - उत्तम सत्य का, भाव धर्म की शान।
सत्य धर्म धारी पुजें, संत श्रेष्ठ भगवान॥

ॐ ह्रः उत्तम सत्य धर्म धुरन्धर मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥८६॥

संयम को भूषण बना, त्यागे जो भवजाल।
उत्तम संयमवान के, पूजक हुए निहाल॥

ॐ ह्रः उत्तम संयम धर्म धुरन्धर मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥८७॥

तपकर सोना हो रहा, दिव्य गले का हार।
उत्तम तप धारी नमें, इच्छा तजें विकार॥

ॐ ह्रः उत्तम तप धर्म धुरन्धर मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥८८॥

त्याग बिना इस लोक में, बने नहीं कुछ काम॥
मिलता उत्तम त्याग से, धर्मी को शिवधाम॥

ॐ ह्रः उत्तम त्याग धर्म धुरन्धर मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥८९॥

नहीं जगत के हम रहे, जग न हमारा होय।
उत्तम आकिंचन्य के, धारी भव-दुख खोय॥

ॐ ह्रः उत्तम आकिंचन्य धर्म धुरन्धर मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥९०॥

ब्रह्मचर्य की गंध से, महके लोकालोक।
ब्रह्मचर्य धारी हरें, तन मन के मद शोक॥

ॐ ह्रः उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म धुरन्धर मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥९१॥

चतु संज्ञायें त्याग जो, करें जगत उद्धार।
अर्घ्य चढ़ाएँ हम उन्हें, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रः चतुःसंज्ञा त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥९२॥

खान पान की भावना, जो संज्ञा आहार।
उसके त्यागी संत को, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रः आहार संज्ञा त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥९३॥

डरना या भयभीत की, जो संज्ञा भयकार।
उसके त्यागी संत को, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रः भयसंज्ञा त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥९४॥

मैथुन संज्ञा पाप है, ब्रह्मचर्य हर्त्तार।
उसके त्यागी संत को, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रः मैथुनसंज्ञा त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥९५॥

परिग्रह संज्ञा नाशती, आकिंचन आकार।
उसके त्यागी संत को, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रः परिग्रहसंज्ञा त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥९६॥

मनो-वचन या काय की, चेष्टायें दुखकार।
तीन दण्ड के त्यजक को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रः त्रयदण्ड त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥९७॥

बुरे भाव मन के तजे, करके शुद्ध विचार।
मनोदण्ड के त्यजक को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रः मनोदण्ड त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥९८॥

झूठ कटुक वाणी तजें, करें वचन शृंगार।
वचनदण्ड के त्यजक को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रः वचोदण्ड त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥९९॥

काया के सब तज दिये, बुरे-बुरे व्यापार।
कायदण्ड के त्यजक को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रः कायदण्ड त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१००॥

(अर्द्ध विष्णु)

मंत्र पंचपरमेष्ठी वाचक, जो ओंकारा है।
उसके ध्याता यतिवरजी को, नमन हमारा है॥

ॐ ह्रः पंच परमेष्ठी रूप ओंकार ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१०१॥

तीन लोक का मंगल वाचक, जो ओंकारा है।
उसके ध्याता यतिवरजी को, नमन हमारा है॥

ॐ ह्रः त्रिलोकरूप ओंकार ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१०२॥

रत्नत्रय का मंगल वाचक, जो ओंकारा है।
उसके ध्याता यतिवरजी को, नमन हमारा है॥

ॐ ह्रः रत्नत्रयरूप ओंकार ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१०३॥

देवशास्त्र गुरुओं का वाचक, जो ओंकारा है।
उसके ध्याता यतिवरजी को, नमन हमारा है॥

ॐ ह्रः देवशास्त्रगुरुरूप ओंकार ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१०४॥

छह द्रव्यों का मंगलवाचक, जो ओंकारा है।
उसके ध्याता यतिवरजी को, नमन हमारा है॥

ॐ ह्रः षट् द्रव्य रूप ओंकार ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१०५॥

अस्तिकाय पाँचों का वाचक, जो ओंकारा है।
उसके ध्याता यतिवरजी को, नमन हमारा है॥

ॐ ह्रः पंचास्तिकाय रूप ओंकार ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१०६॥

सात तत्त्व का मंगलवाचक, जो ओंकारा है।
उसके ध्याता यतिवरजी को, नमन हमारा है॥

ॐ ह्रः सप्त तत्त्व रूप ओंकार ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१०७॥

नवपदार्थ का मंगलवाचक, जो ओंकारा है।
उसके ध्याता यतिवरजी को, नमन हमारा है॥

ॐ ह्रः नव पदार्थ रूप ओंकार ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१०८॥

चारों आराधन का वाचक, जो ओंकारा है।
उसके ध्याता यतिवरजी को, नमन हमारा है॥

ॐ ह्रः चतु-आराधना रूप ओंकार ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१०९॥

त्रय प्रकार आतम का वाचक, जो ओंकारा है।
उसके ध्याता यतिवरजी को, नमन हमारा है॥

ॐ ह्रः त्रयविधात्मारूप ओंकार ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥११०॥

द्वादशांग जिनवाणी वाचक, जो ओंकारा है।
उसके ध्याता यतिवरजी को, नमन हमारा है॥

ॐ ह्रः द्वादशांग जिनवाणीरूप ओंकार ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१११॥

उत्पाद व्यय ध्रौव्य का वाचक, जो ओंकारा है।
उसके ध्याता यतिवरजी को, नमन हमारा है॥

ॐ ह्रः उत्पाद व्यय-ध्रौव्यरूप ओंकार ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥११२॥

तीन देव का मंगलवाचक, जो ओंकारा है।
उसके ध्याता यतिवरजी को, नमन हमारा है॥

ॐ ह्रः त्रिदेवरूप ओंकार ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥११३॥

तीन वेद का मंगलवाचक, जो ओंकारा है।
उसके ध्याता यतिवरजी को, नमन हमारा है॥

ॐ ह्रः त्रिवेदरूप ओंकार ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥११४॥

तीन योग का मंगल वाचक, जो ओंकारा है।
उसके ध्याता यतिवरजी को, नमन हमारा है॥

ॐ ह्रः त्रियोगरूप ओंकार ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥११५॥

तीन दशा का मंगल वाचक, जो ओंकारा है।
उसके ध्याता यतिवरजी को, नमन हमारा है॥

ॐ ह्रः त्रिदशारूप ओंकार ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥११६॥

सोऽहम् का भी मंगल वाचक, जो ओंकारा है।
उसके ध्याता यतिवरजी को, नमन हमारा है॥

ॐ ह्रः सोऽहम्रूप ओंकार ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥११७॥

वर्णाक्षर का जन्म प्रदाता, जो ओंकारा है।
उसके ध्याता यतिवरजी को, नमन हमारा है॥

ॐ ह्रः वर्णाक्षरजनकरूप ओंकार ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥११८॥

पूर्ण अहिंसा का भी वाचक, जो ओंकारा है।
उसके ध्याता यतिवर जी को, नमन हमारा है॥

ॐ ह्रः पूर्ण अहिंसारूप ओंकार ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥११९॥

पाँच रंग का मंगल वाचक, जो ओंकारा है।
उसके ध्याता यतिवरजी को, नमन हमारा है॥

ॐ ह्रः पंचवर्णरूप ओंकार ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१२०॥

त्रिविधजाप का मंगल वाचक, जो ओंकारा है।
उसके ध्याता यतिवरजी को, नमन हमारा है॥

ॐ ह्रः त्रिविधजापरूप ओंकार ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१२१॥

पाँच ज्ञान का मंगल वाचक, जो ओंकारा है।
उसके ध्याता यतिवरजी को, नमन हमारा है॥

ॐ ह्रः पंचज्ञानरूप ओंकार ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१२२॥

मन वच तन चंचलता नाशक, जो ओंकारा है।
उसके ध्याता यतिवरजी को, नमन हमारा है॥

ॐ ह्रः चंचलतानाशकरूप ओंकार ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१२३॥

दोष विनाशक मंगलकारक, जो ओंकारा है।
उसके ध्याता यतिवरजी को, नमन हमारा है॥

ॐ ह्रः दोषविनाशक मंगलकररूप ओंकार ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१२४॥

संकटमोचक शक्ति प्रदायक, जो ओंकारा है।
उसके ध्याता यतिवरजी को, नमन हमारा है॥

ॐ ह्रः संकटमोचक शक्तिदातारूप ओंकार ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१२५॥

विश्वशांति का बीज मंत्र वह, जो ओंकारा है।
उसके ध्याता यतिवरजी को, नमन हमारा है॥

ॐ ह्रः विश्वशांतिरूप ओंकार ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१२६॥

सर्व पर्व का मंगलदाता, जो ओंकारा है।
उसके ध्याता यतिवरजी को, नमन हमारा है॥

ॐ ह्रः सर्वपर्वरूप ओंकार ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१२७॥

वातावरण शुद्धि का कर्त्ता, जो ओंकारा है।
उसके ध्याता यतिवरजी को, नमन हमारा है॥

ॐ ह्रः वातावरण शुद्धि कर्त्तारूप ओंकार ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१२८॥

बारह कला सार का वाचक, जो ओंकारा है।
उसके ध्याता यतिवरजी को, नमन हमारा है॥

ॐ ह्रः द्वादश कलारूप ओंकार ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१२९॥

तेरह विधचारित का वाचक, जो ओंकारा है।
उसके ध्याता यतिवरजी को, नमन हमारा है॥

ॐ ह्रः त्रयोदशविधचारित्ररूप ओंकार ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१३०॥

अपरिग्रह का मंगल वाचक, जो ओंकारा है।
उसके ध्याता यतिवरजी को, नमन हमारा है॥

ॐ ह्रः अपरिग्रहरूप ओंकार ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१३१॥

सब मंत्रों का जनक मंत्र वह, जो ओंकारा है।
उसके ध्याता यतिवरजी को, नमन हमारा है॥

ॐ ह्रः सकल मंत्रजनकरूप ओंकार ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१३२॥

सब बीजाक्षर में मुखिया वह, जो ओंकारा है।
उसके ध्याता यतिवर जी को, नमन हमारा है ॥

ॐ ह्रः मूलबीजाक्षररूप ओंकार ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१३३॥

चौबीसों तीर्थंकर जी का, वाचक ह्रीं प्यारा।
इसके आराधक मुनिवर का, वन्दन सुखकारा॥

ॐ ह्रः बीजाक्षर ह्रीं ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१३४॥

अंतरंग बहिरंग रमा का, वाचक श्रीं प्यारा।
इसके आराधक मुनिवर का, वन्दन सुखकारा॥

ॐ ह्रः बीजाक्षर श्रीं ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१३५॥

निजपर की जो महाशांति का, वाचक क्लीं प्यारा।
इसके आराधक मुनिवर का, वन्दन सुखकारा॥

ॐ ह्रः बीजाक्षर क्लीं ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१३६॥

जो ऐश्वर्यवान है उसका, वाचक ऐं प्यारा।
इसके आराधक मुनिवर का, वन्दन सुखकारा॥

ॐ ह्रः बीजाक्षर ऐं ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१३७॥

अर्हन्तों का मंगल वाचक, जो अर्हम् प्यारा।
इसके आराधक मुनिवर का, वन्दन सुखकारा॥

ॐ ह्रः बीजाक्षर अर्हं ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१३८॥

स्वस्तिक प्यारा मंगलवाचक, मुनिवरजी ध्याते।
भेदज्ञान की शिक्षा दाता, उर में हम लाते॥

ॐ ह्रः स्वस्तिक ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१३९॥

समवसरण में अर्हत् जी को, ध्याते अनगारी।
तभी सिद्ध भगवन् सी लगती, मुनि मूरत न्यारी॥

ॐ ह्रः समवसरणस्थ अर्हत् ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१४०॥

कृत्रिमाकृत्रिम जिनबिम्बों को, ध्याते अनगारी।
तभी सिद्ध भगवन् सी लगती, मुनि मूरत न्यारी॥

ॐ ह्रः कृत्रिमाकृत्रिम जिनबिम्ब ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१४१॥

जिनवर के अतिशय क्षेत्रों को, ध्याते अनगारी।
तभी सिद्ध भगवन् सी लगती, मुनि मूरत न्यारी॥

ॐ ह्रः जिन-अतिशय क्षेत्र ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१४२॥

जिनवर जी की सिद्ध भूमियाँ, ध्याते अनगारी।
तभी सिद्ध भगवन् सी लगती, मुनि मूरत न्यारी॥

ॐ ह्रः जिन-सिद्धक्षेत्र ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१४३॥

नव देवों की पावन महिमा, ध्याते अनगारी।
तभी सिद्ध भगवन् सी लगती, मुनि मूरत न्यारी॥

ॐ ह्रः नवदेवतारूप ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१४४॥

नंदीश्वर के जिनबिम्बों को, ध्याते अनगारी।
तभी सिद्ध भगवन् सी लगती, मुनि मूरत न्यारी॥

ॐ ह्रः नंदीश्वर द्वीपस्थ जिनबिम्ब ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१४५॥

स्वयं-बुद्ध तीर्थंकर जी को, ध्याते अनगारी।
तभी सिद्ध भगवन् सी लगती, मुनि मूरत न्यारी॥

ॐ ह्रः स्वयंभू ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१४६॥

जो प्रत्येक बुद्ध भगवन् को, ध्याते अनगारी।
तभी सिद्ध भगवन् सी लगती, मुनि मूरत न्यारी॥

ॐ ह्रः प्रत्येकबुद्ध ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१४७॥

बोधितबुद्ध पूज्य भगवन् को, ध्याते अनगारी।
तभी सिद्ध भगवन् सी लगती, मूनि मूरत न्यारी॥

ॐ ह्रः बोधितबुद्ध ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१४८॥

पूज्य गर्भ कल्याणक जी को, ध्याते अनगारी।
तभी सिद्ध भगवन् सी लगती, मुनि मूरत न्यारी॥

ॐ ह्रः गर्भकल्याणक ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१४९॥

पूज्य जन्म कल्याणक जी को, ध्याते अनगारी।
तभी सिद्ध भगवन् सी लगती, मुनि मूरत न्यारी॥

ॐ ह्रः जन्मकल्याणक ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१५०॥

उत्तम तप कल्याणक जी को, ध्याते अनगारी।
तभी सिद्ध भगवन् सी लगती, मुनि मूरत न्यारी॥

ॐ ह्रः तपकल्याणक ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१५१॥

पूज्य ज्ञान कल्याणक जी को, ध्याते अनगारी।
तभी सिद्ध भगवन् सी लगती, मुनि मूरत न्यारी॥

ॐ ह्रः ज्ञानकल्याणक ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१५२॥

पूज्य मोक्ष कल्याणक जी को, ध्याते अनगारी।
तभी सिद्ध भगवन् सी लगती, मुनि मूरत न्यारी॥

ॐ ह्रः मोक्षकल्याणक ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१५३॥

पाँच तीन दो कल्याणक को, ध्याते अनगारी।
तभी सिद्ध भगवन् सी लगती, मुनि मूरत न्यारी॥

ॐ ह्रः पंचत्रयद्विकल्याणक ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१५४॥

अतिशय जो चौंतीस देव के, ध्याते अनगारी।
तभी सिद्ध भगवन् सी लगती, मुनि मूरत न्यारी॥

ॐ ह्रः चतुस्त्रिंशत् अतिशय सहित जिनवर ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१५५॥

कायोत्सर्ग जैनमुद्रा को, ध्याते अनगारी।
तभी सिद्ध भगवन् सी लगती, मुनि मूरत न्यारी॥

ॐ ह्रः कायोत्सर्गमुद्रा ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१५६॥

तीन काल के तीर्थंकर जी, ध्याते अनगारी।
तभी सिद्ध भगवन् सी लगती, मुनि मूरत न्यारी॥

ॐ ह्रः त्रयकाल संबंधी तीर्थंकर ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१५७॥

जग के स्वामी रमा अधीश्वर, श्रेष्ठ रहे ज्ञानी।
नमस्कार उन मुनिवर को जो, वक्ता हैं स्वामी॥

ॐ ह्रः श्रेष्ठ मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१५८॥

बुद्धिमान जो कामदेव का, पूर्ण विनाश करें।
नमस्कार उन मुनिवर को जो, जो संन्यास धरें॥

ॐ ह्रः कामदेव विनाशन समर्थ मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१५९॥

मृत्युराज को जीत रहे जो, मृत्युंजयी वही।
नमस्कार उन मुनिवर को जो, त्रय जग को विजयी॥

ॐ ह्रः मृत्युंजयी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१६०॥

अनुपम महिमा धारी हैं जो, इन्द्रों के राजा।
नमस्कार उन मुनिवर को जो, अपने मुनिराजा॥

ॐ ह्रः इन्द्रपूज्य मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१६१॥

भूत भविष्यत् वर्तमान में, आगम नयन रहे।
नमस्कार उन मुनिवर को जो, साँचे जैन रहे॥

ॐ ह्रः आगमचक्षु मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१६२॥

(चौपाई)

जैनधर्म का मूल मंत्र जो, सुख पाने का मूल तन्त्र वो।
णमोकार का ध्यान लगाएँ, नमोऽस्तु करके अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रः मूलमंत्र ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१६३॥

सब मंत्रों में महा-महा है, उसके जैसा मंत्र कहाँ है ?
माहमंत्र का ध्यान लगाएँ, नमोऽस्तु करके अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रः महा मंत्र ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१६४॥

सब मंगल में पहला मंगल, पापों का यह नाशे दलदल।
मंगलमंत्र सदा ही ध्यायें, नमोऽस्तु करके अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रः मंगल मंत्र ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१६५॥

णमोकार का नाम निराला, मंत्र पंच परमेष्ठी वाला।
परमेष्ठी का ध्यान लगाएँ, नमोऽस्तु करके अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रः पंच परमेष्ठी मंत्र ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१६६॥

अनादिनिधन मंत्र यह प्यारा, भक्त जनों का सदा सहारा।
अनादिनिधन का ध्यान लगाएँ, नमोऽस्तु करके अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रः अनादिनिधन मंत्र ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१६७॥

हुआ पराजित नहीं किसी से,अपराजित है मंत्र इसी से।
अपराजित का ध्यान लगाएँ, नमोऽस्तु करके अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रः अपराजित मंत्र ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१६८॥

साधक जिससे मृत्यु जीत लें, उन्हें नमन कर भक्त सीख लें।
मृत्युंजय का ध्यान लगाएँ, नमोऽस्तु करके अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रः मृत्युंजयी मंत्र ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१६९॥

सर्व सिद्धियों का जो दाता, णमोकार का नाम सुहाता।
सिद्धिदायक ध्यान लगाएँ, नमोऽस्तु करके अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रः सर्वसिद्धिदायक मंत्र ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१७०॥

तारणतरण मंत्र सुखकारी, णमोकार की महिमा न्यारी।
भवसागर से पार लगाएँ, नमोऽस्तु करके अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रः तारणतरण मंत्र ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१७१॥

णमोकार को जो जन ध्याते, उनको विघ्न कभी न आते।
विघ्न विनाशक को हम ध्यायें, नमोऽस्तु करके अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रः सर्वविघ्न नाशक मंत्र ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१७२॥

चौरासी लाख मंत्र का दाता, उत्पादक आधार कहाता।
सकल मंत्र का ध्यान लगाएँ, नमोऽस्तु करके अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रः सकल मंत्र उत्पादक मंत्र ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१७३॥

श्रेष्ठ परम पद के रहवासी, हम हैं पूजन के अभिलाषी।
परम पदों को शीश झुकाएँ, नमोस्तु करके अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रः परम पद स्थित मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१७४॥

जनम मरण से सब हैं दुखिया, कर्म विजेता बनते सुखिया।
जनम मरण के चक्र नशाएँ, नमोस्तु करके अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रः जन्म मरण विनाशक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१७५॥

जिन मुनि के सान्निध्य निराले, सबको खुशियाँ देने वाले।
उनके चरण सरोज सुहाएँ, नमोऽस्तु करके अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रः अतिशयकारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१७६॥

तीर्थंकर अर्हन्त जिनंदा, सबको देते परमानंदा।
रोमांचित मुनि संत कहायें, नमोस्तु करके अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रः तीर्थंकर केवलिपदानुरागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१७७॥

जिनके कल्याणक ना पाँचों, उनकी पूजा करके नाँचो।
हम सामान्य केवली ध्याएँ, नमोऽस्तु करके अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रः सामान्य केवली पदानुरागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१७८॥

जो सहकर उपसर्ग कहानी, बन जाते हैं ज्ञानी ध्यानी।
वो उपसर्ग केवली ध्याएँ, नमोस्तु करके अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रः उपसर्ग केवली पदानुरागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१७९॥

केवलज्ञानी भगवन होकर, रहते मौन चेतना ध्याकर।
मूक केवली को को हम ध्याएँ, नमोस्तु करके अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रः मूककेवली पदानुरागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१८०॥

एक गये जब मोक्ष मुनिंदा, हुआ अन्य को ज्ञानानंदा।
साधक वे अनुबद्ध कहाएँ, नमोस्तु करके अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रः अनुबद्ध केवलि पदानुरागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१८१॥

समुद्घात करके पा डाला, जिनने पद निर्वाण निराला।
समुद्घात कैवल्य कहाएँ, नमोस्तु करके अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रः समुद्घात केवलि पदानुरागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१८२॥

(दोहा)

ज्ञानावरणी कर्म जो, घात रहे दिनरात।
उन ज्ञानी के चरण में, वन्दन हो नत माथ॥

ॐ ह्रः ज्ञानावरणकर्म नाशन समर्थ मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१८३॥

कर्म दर्शनावरण जो, हरने को कटिबद्ध।
उनके दर्शन को हुए, भक्त वर्ग करबद्ध॥

ॐ ह्रः दर्शनावरणकर्म नाशन समर्थ मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१८४॥

मोहनीय का कर्म जो, नित करके परिहार।
वैरागी का राग ही, भक्तों का शृंगार॥

ॐ ह्रः मोहनीयकर्म नाशन समर्थ मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१८५॥

सन्त साधना कर करें, अन्तराय का नाश।
उन्हें वन्दना कर सधे, भक्तों का संन्यास॥

ॐ ह्रः अन्तरायकर्म नाशन समर्थ मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१८६॥

वेदनीय विधि की व्यथा, हरें संत मुनिराय।
उनको माथा टेककर, क्षण में कष्ट पलाय॥

ॐ ह्रः वेदनीयकर्म नाशन समर्थ मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१८७॥

आयुकर्म ही खींचकर, भव भव हमें घुमाय।
आयुकर्म नाशक सुधी, हमको दें शिवराय॥

ॐ ह्रः आयुकर्म नाशन समर्थ मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१८८॥

नामकर्म के भर्म से, मोक्ष मिले ना शर्म।
नामकर्म नाशक करें, हमें सुरक्षित धर्म॥

ॐ ह्रः नामकर्म नाशन समर्थ मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१८९॥

गोत्रकर्म को छोड़ने, संत धरे समभाव।
उनकी महिमा गा मिले, हमको आत्म स्वभाव॥

ॐ ह्रः गोत्रकर्म नाशन समर्थ मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१९०॥

दौड़ धूप साधक करें, पाने, ज्ञान-अनंत।
साधक ज्ञानानंद को, नमन अनन्तानन्त॥

ॐ ह्रः अनन्तज्ञान दायक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१९१॥

अनन्तदर्शन प्राप्ति को, सन्त चलें शिवराह।
चरणचिह्न ही सन्त के, हमें दिखाते राह॥

ॐ ह्रः अनन्तदर्शन दायक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१९२॥

अनन्तसुख-सुखसार औ, क्षायिक गुण सम्यक्त्व।
इस गुण के इच्छित मुनि, करें शुद्ध भव्यत्व॥

ॐ ह्रः अनन्तसुख दायक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१९३॥

अनन्त बल पाने करें, जो साधक पुरुषार्थ।
उनकी सेवा से हुआ, पूर्ण मनोरथ स्वार्थ॥

ॐ ह्रः अनन्तबल दायक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१९४॥

जो अव्याबाधत्व गुण, पाने को अकुलाय।
ऐसे मुनि की वन्दना, मन को चैन दिलाय॥

ॐ ह्रः अव्याबाधत्व गुण दायक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१९५॥

भक्ति सरोवर में सदा, जो करते अवगाह।
उनको अवगाहत्व गुण, मिले हरे भव दाह॥

ॐ ह्रः अवगाहनत्व गुण दायक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१९६॥

प्राप्त करें सूक्ष्मत्व गुण, जिनकी ऐसी आश।
उनके चरणों में झुके, सारा जग बन दास॥

ॐ ह्रः सूक्ष्मत्व गुण दायक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१९७॥

जिन्हें अगुरुलघुत्व गुण, पाने का है भाव।
समता मूरत संत वे, हरते सभी विभाव॥

ॐ ह्रः अगुरुलघुत्व गुण दायक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१९८॥

घाति कर्म घातक पुजे, पाके पद अर्हन्त।
साधक ऐसे भाव के, हमको दें शिवपन्थ॥

ॐ ह्रः घातिकर्म नाशन समर्थ मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥१९९॥

ठाठ-बाठ सब छोड़ जो, कर्म करें कृश आठ।
उनका बस दर्शन हमें, सिखा रहा शिव पाठ॥

ॐ ह्रः अष्टकर्म नाशन समर्थ मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२००॥

सिद्धों के गुण आठ जो, पाने करें प्रयास।
उनकी महिमा जगत में, सिद्ध बनी इतिहास॥

ॐ ह्रः अष्टगुण दायक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२०१॥

वीत गयी है पूर्ण ही, जिसकी रागी आग।
पूज्य वीतरागी वही, साधक हैं सौभाग्य॥

ॐ ह्रः वीतरागी देवोपासक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२०२॥

सकल विश्व के द्रव्य सब, युगपत् जाने देख।
वो स्वामी सर्वज्ञ हैं, उनको हम सिर टेक॥

ॐ ह्रः सर्वज्ञ देवोपासक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२०३॥

भूत भविष्यत् आज की, नन्त द्रव्य पर्याय।
अनन्तज्ञ जिननाथ के, साधक के गुण गाय॥

ॐ ह्रः अनन्तज्ञ देवोपासक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२०४॥

मोक्षमार्ग के रत्नत्रय दें, जो दें हित-उपदेश।
हितोपदेशी को नमें, आराधक भक्तेश॥

ॐ ह्रः हितोपदेशी देवोपासक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२०५॥

जिनमें कोई दोष ना, वे साँचे निर्दोष।
उनके साधक संत हैं, अपने सुख के कोष॥

ॐ ह्रः निर्दोषी देवोपासक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२०६॥

मोहनीय जब ना रहा, क्षुधा रहित सद्ज्ञान।
उन्हें न कवलाहार हो, भजो भजो भगवान॥

ॐ ह्रः क्षुधा दोषरहित देवोपासक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२०७॥

क्षुधा दूर जैसे हुई, हुई निवारण प्यास।
तृषा रहित प्रभु पूजना, दूर करे सब प्यास॥

ॐ ह्रः तृषादोष रहित देवोपासक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२०८॥

दोष बुढ़ापा जो हरे, हृदय वसें वे नाथ।
जरा दोष जिनका नहीं, उन्हें झुकाएँ माथ॥

ॐ ह्रः जरादोष रहित देवोपासक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२०९॥

केवलज्ञानी काय के, दूर हुए सब रोग।
परमौदारिक देह ही, हैं पूजन के योग्य॥

ॐ ह्रः रोग दोष रहित देवोपासक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२१०॥

जन्म दोष की यातना, सहे नहीं भगवान्।
जन्म रहित भगवन् को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रः जन्मदोष रहित देवोपासक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२११॥

मृत्युंजयी जो भी बने, पंडित पंडित मर्ण।
मरण, मरण जो मारते, साधक हैं शिवशर्ण॥

ॐ ह्रः मरणदोष रहित देवोपासक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२१२॥

सातों भय जो जीतकर, बने अभय भगवान्।
उनके साधक संत ही, करें जगत कल्याण॥

ॐ ह्रः भयदोष रहित देवोपासक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२१३॥

करें गर्व का पर्व ना, करें गर्व का नाश।
ऐसे साधक संत ही, दें हमको संन्यास॥

ॐ ह्रः घमण्डदोष रहित देवोपासक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२१४॥

केवलज्ञानी को नहीं, राग द्वेष का लेश।
उनके साधक संत ही, दिए धर्म संदेश॥

ॐ ह्रः रागदोष रहित देवोपासक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२१५॥

समता का परिणाम जो, सकल द्वेष को जीत।
ऐसे साधक के चरण, हैं साँचे संगीत॥

ॐ ह्रः द्वेषदोष रहित देवोपासक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२१६॥

मोह नाम का काल वन, किया जिन्होंने दग्ध।
मोह रहित साधक करें, हम भक्तों को मुग्ध॥

ॐ ह्रः मोहदोष रहित देवोपासक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२१७॥

चिन्ता के साम्राज्य को, ध्यान खड्ग से जीत।
आराधक आराध्य हैं, भक्तों के मन मीत॥

ॐ ह्रः चिन्तादोष रहित देवोपासक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२१८॥

अरति नाम का दैत्य ही, करता है कंगाल।
विजय दयालु जी करें, सबको मालामाल॥

ॐ ह्रः अरतिदोष रहित देवोपासक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२१९॥

विजय भूत आश्चर्य कर, किए स्वप्न साकार।
वही देव सर्वज्ञ दें, भक्तों को उपहार॥

ॐ ह्रः आश्चर्यदोष रहित देवोपासक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२२०॥

निद्रा करती विश्व में, महा महा संग्राम।
निद्रा विजयी संत को, बारम्बर प्रणाम॥

ॐ ह्रः निद्रादोष रहित देवोपासक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२२१॥

खेद नाम कीट ने, खा डाला जड़ मूल।
खेद विजेता संत की, पूजा है अनुकूल॥

ॐ ह्रः खेददोष रहित देवोपासक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२२२॥

शोक नाम की आग ने, जला दिया संसार।
शोक विजेता संत को, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रः शोकरहित देवोपासक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२२३॥

खार पसीना त्याग के, दिए मधुर मुस्कान।
स्वेद विजेता संत को, हो नमोस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रः स्वेददोष रहित देवोपासक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२२४॥

दोष अठारह नष्ट कर, प्रभु करते कल्याण।
जिन अनुयायी संत को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रः अष्टादश दोष रहित देवोपासक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२२५॥

णमोकार के मंत्र से, जिनकी पावन देह।
निज पर के कल्याण को, उन्हें समर्पित येह॥

ॐ ह्रः णमोकारमंत्र उपासक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२२६॥

तन मन वच से ओम का, जो करते हैं, जाप।
उन्हें नमन कर नष्ट हों, हम भक्तों के पाप॥

ॐ ह्रः ओम् उपासक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२२७॥

एक वर्ण के जाप से, थिर रखते जो चित्त।
उनके वन्दन से नहीं, बिगड़े अपना पित्त॥

ॐ ह्रः एकाक्षरी मंत्रजाप निरत मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२२७॥

दो अक्षर के मंत्र के, जापक संत महान।
तन मन दोनों से करें, चेतन का सम्मान॥

ॐ ह्रः द्वयाक्षरीमंत्रजापनिरत मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२२८॥

चार अक्षरी मंत्र का, अनगारी का पाठ।
भक्तों को हर्षित करे, महकाये दिक् आठ॥

ॐ ह्रः चाराक्षरीमंत्रजापनिरत मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२२९॥

पंचाक्षर के मंत्र में, जिनका मन संलग्न।
पंचमगति पाने नमें, पंच पाप हो भग्न॥

ॐ ह्रः पंचाक्षरीमंत्रजापनिरत मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२३०॥

षट् अक्षर का मंत्र ही, जिनका है आदर्श।
उनके अर्चन से मिले, जीवन में उत्कर्ष॥

ॐ ह्रः षडाक्षरीमंत्रजापनिरत मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२३१॥

सोलह अक्षर मंत्र में, जिनका है अनुराग।
मन भौंरा उन चरण में, रमकर पिये पराग॥

ॐ ह्रः सोलहाक्षरीमंत्रजापनिरत मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२३२॥

ले आश्रय रमते सदा, जप अक्षर पैंतीस।
उन्हें वन्दना को झुके, आराधक के शीश॥

ॐ ह्रः पैतीसाक्षरीमंत्रजापनिरत मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२३३॥

उन मुनिवर को हम नमें, जिनमें दिखे न क्रोध।
नाम मात्र जिनका हरे, भक्तों के अवरोध॥

ॐ ह्रः क्रोधकषाय त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२३४॥

मान रहित मुनिराज की, करें अर्चना आज।
जीत-जीत उपसर्ग वे, सफल करें हर काज॥

ॐ ह्रः मान कषाय त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२३५॥

माया की छाया नहीं, जिन मुनिवर के पास।
काया जिनकी शुद्ध है, उनके हम सब दास॥

ॐ ह्रः माया कषाय त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२३६॥

बाह्य वस्तु का क्या कहें, जिन्हें न तन से लोभ।
पर उपकारी संत वे, हरें हमारे क्षोभ॥

ॐ ह्रः लोभ कषाय त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२३७॥

संत साधना देखकर, कृश-कृश होय कषाय।
उन साधक के दर्श से, हृदय कमल खिल जाय॥

ॐ ह्रः चतुःकषाय त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२३८॥

अन्त रहित संसार से, जिसका है अनुबन्ध।
उसके त्यागी संत ही, नाश हरें दुःख द्वन्द्व॥

ॐ ह्रः अनन्तानुबंधी कषाय त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२३९॥

एक देश संयम हरे, करे धरम पर मार।
यथा कषायों के तजी, नमन करें स्वीकार॥

ॐ ह्रः अप्रत्याख्यानावरणीय कषाय त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२४०॥

एक देश संयम करे, किन्तु नहीं दे पूर्ण।
त्यागी यथा कषाय के, दें हमको सुख पूर्ण॥

ॐ ह्रः प्रत्याख्यानावरणीय कषाय त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२४१॥

हरण सकल चारित्र कर, बनें मुक्ति अवरोध।
तजकर सकल कषाय वो, करते आतम शोध॥

ॐ ह्रः संज्वलन कषाय त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२४२॥

सकल कषायें त्याग जो, तजने दे उपदेश।
मचल रहे हम भक्ति को, सुनो! सुनो! परमेश॥

ॐ ह्रः सकल कषाय त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२४३॥

राग-द्वेष वा मोह ये, भव के कारण तीन।
इन्हें त्यागने हम भजें, रत्नत्रय आसीन॥

ॐ ह्रः रागद्वेषमोहत्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२४४॥

आर्त्त ध्यान दुख मूल जो, त्याग दिये मुनिराज।
आर्त्त ध्यान को त्यागने, उन्हें नमें हम आज॥

ॐ ह्रः आर्त्तध्यान त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२४५॥

रौद्रध्यान भव कूप जो, करते मुनि परिहार।
रौद्रध्यान को त्यागने, मिले उन्हीं का द्वार॥

ॐ ह्रः रौद्रध्यान त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२४६॥

धर्मध्यान सुखसार जो, ध्याते संत सुधीर।
धर्मध्यान पाने सदा, करें वन्दना वीर॥

ॐ ह्रः धर्मध्यानध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२४७॥

शुक्लध्यान शिवद्वार जो, रखें भावना भव्य।
उनका भजना पूजना, अपना है कर्त्तव्य॥

ॐ ह्रः शुक्लध्यानध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२४८॥

महिमा सम्यक् दर्श की, जो गाते त्रयकाल।
उन्हें नमन करके टले, मिथ्या भव का जाल॥

ॐ ह्रः सम्यग्दर्शन महिमा गायक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२४९॥

महिमा सम्यग्ज्ञान की, गा के थके न वान।
उनको योग सँभाल के,करें नमन धर ध्यान॥

ॐ ह्रः सम्यग्ज्ञान महिमा गायक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२५०॥

महिमा सम चारित्र की, जिन्हें बुलाती पास।
उन्हें पूजने आ रहे, चरितवान के दास॥

ॐ ह्रः सम्यक्चारित्र महिमा गायक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२५१॥

रत्नत्रय की साधना, करती जिन्हें निहाल।
उन रत्नत्रय निलय को, वन्दन तीनों काल॥

ॐ ह्रः रत्नत्रय मूर्ति मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२५२॥

रत्नत्रय की अर्चना, करके जो संतुष्ट।
उनका वन्दन कर रहा, हम भक्तों को पुष्ट॥

ॐ ह्रः रत्नत्रय आराधक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२५३॥

रत्नत्रय की देशना, करें हरें अपवाद।
उन्हें शीश झुकता सदा, जगत्पूज्य जिनपाद॥

ॐ ह्रः रत्नत्रय-उपदेशक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२५४॥

रत्नत्रय की भावना, तन मन करे पवित्र।
भक्त खोजते हैं उन्हें, दोष रहित जिन चित्र॥

ॐ ह्रः रत्नत्रय भावनारत मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२५५॥

रत्नत्रय का दान दे, जो करते कल्याण।
उनकी सेवा में रहें, अर्पित तन मन प्राण॥

ॐ ह्रः रत्नत्रयदाता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२५६॥

रत्नत्रय की शुद्धता, करवाते जो नाथ।
उनको क्या हम भेंट दें, जिनका मुझपर हाथ॥

ॐ ह्रः रत्नत्रय दोष निवारक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२५७॥

रत्नत्रय रक्षित करें, चरण शरण दे दान।
हाथ जोड़ उनका करें, हरपल हम सम्मान॥

ॐ ह्रः रत्नत्रय रक्षक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२५८॥

कुगति नरक गति कूप से, जो मुनिवर भयभीत।
साँचे उन मुनिराज को, वन्दन हो अगणीत॥

ॐ ह्रः नरकगति निवारक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२५९॥

दुखमय गति तिर्यंच को, तजने दें उपदेश।
उन योगी को हम नमें, जिनका साँचा वेश॥

ॐ ह्रः तिर्यञ्चगति निवारक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२६०॥

मानव गति के कष्ट को, हरो चलो शिवराह।
पथदर्शक मुनिराज की, हमें चरण की चाह॥

ॐ ह्रः मनुष्यगति निवारक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२६१॥

देवों की गति भोगमय, बढ़ा रही भव रोग।
उससे जो भयभीत हैं, उन्हें नमन त्रय योग॥

ॐ ह्रः देवगति निवारक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२६२॥

चारों गति के चक्र को, जिन्हें छोड़ना इष्ट।
पंचम गति के लाभ को, उन्हें नमें बन शिष्ट॥

ॐ ह्रः पंचमगति आराधक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२६३॥

(अर्द्ध ज्ञानोदय)

सदा प्रथम-अनुयोग शास्त्र का, जो करते स्वाध्याय मुनि।
चरण वन्दना उनकी करके, हम बनते यशवान गुणी॥

ॐ ह्रः प्रथमानुयोग स्वाध्यायरत मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२६४॥

जो पढ़ते करणानुयोग को, लोकालोक ज्ञान करने।
भक्त अर्चना उनकी करके, चले चक्र भव का हरने॥

ॐ ह्रः करणानुयोग स्वाध्यायरत मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२६५॥

साधक जो चरणानुयोग से, चर्या में निखार लाते।
सदाचार पालन करने को, उनके चरण पखार पाते॥

ॐ ह्रः चरणानुयोग स्वाध्यायरत मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२६६॥

आत्म दशा द्रव्यानुयोग से, ज्ञात करें भव व्यथा हरें।
आतम रसिया उन साधक को, नमन करें शिव कथा करें॥

ॐ ह्रः द्रव्यानुयोग स्वाध्यायरत मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२६७॥

चारों - चारों अनुयोगों को, आत्मसात करने पढ़ते।
उन ज्ञानी ध्यानी की पूजा, करके भक्त चरण पड़ते॥

ॐ ह्रः चतु-अनुयोग स्वाध्यायरत मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२६८॥

मुनि-दर्शन कर ऐसा लगता, पूज्य जिनालय ये साँचा।
चलते फिरते तीर्थ वन्दना, करके मन मयूर नाँचा॥

ॐ ह्रः चलित जिनालय रूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२६९॥

आत्म ध्यान में लीन हुए जब, संत लगे तब सिद्धों से।
सिद्ध रूप हो, संत वन्दना, बचो कर्म के गिद्धों से॥

ॐ ह्रः सिद्धरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२७०॥

प्रभावना जो मोक्षमार्ग की, करते हैं अर्हन्त समा।
मुनिवर वे शरणागत हमपर, करें कृपा अपराध क्षमा॥

ॐ ह्रः अर्हन्तरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२७१॥

दीक्षा शिक्षा जो देकर के, असंख्य भव्यों को तारें।
वे आचार्य रूप मुनिवरजी, दया दृष्टि हम पर डालें॥

ॐ ह्रः आचार्यरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२७२॥

जिनवाणी का राज समझकर, करें आचरण जाप करें।
उपाध्याय सम वे मुनिवर जी, मोह पाप संताप हरें॥

ॐ ह्रः उपाध्यायरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२७३॥

ज्ञान ध्यान तप में रत रहकर, निज पर का कल्याण करें।
पूज्य जितेन्द्री साधु संत वे, हम भक्तों में प्राण भरें॥

ॐ ह्रः साधुरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२७४॥

खोटी उल्टी श्रद्धाओं को, मुनि मिथ्यात्व बताते हैं।
मिथ्यादर्शन के त्यागी को, सादर शीश झुकाते हैं॥

ॐ ह्रः मिथ्यादर्शन त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२७५॥

छोड़ा है मिथ्यात्व कर्म जो, कर्मोदय अगृहीत दशा।
ऐसे कर्मोदय त्यागी का, ध्यान हमारे हृदय वसा॥

ॐ ह्रः अगृहीत मिथ्यात्व त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२७७॥

गृहीत है मिथ्यात्व पाप जो, पर उपदेशों से पाया।
उसके त्यागी मुनिवर हमको, देवें सम्यक् की माया॥

ॐ ह्रः गृहीत्व मिथ्यात्व त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२७८॥

किसी वस्तु के एक धर्म को, मान अन्य का लोप करें।
मिथ्यादृग एकान्त नाम के, त्यागी मुनि मम कोप हरें॥

ॐ ह्रः एकान्तगृहीत मिथ्यात्व त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२७९॥

उल्टा वस्तु स्वरूप समझकर, श्रद्धा करना मनमानी।
मिथ्यादृग विपरीत उसी के,त्यागी मुनि जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः विपरीतगृहीत मिथ्यात्व त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२८०॥

सब देवों का सब धर्मों का, समान आदर नित करना।
वही विनय मिथ्यात्व उसी के, त्यागी मुनि सुख के झरना॥

ॐ ह्रः विनयगृहीत मिथ्यात्व त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२८१॥

धर्म अहिंसा में होता या, हिंसा में यह संशय जो।
है संशय मिथ्यात्व उसी के, त्यागी मुनि जिन आलय वो॥

ॐ ह्रः संशयगृहीत मिथ्यात्व त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२८२॥

ज्ञान हिताहित का ना होना, मिथ्यादृग अज्ञानवही।
उसके त्यागी ज्ञानी मुनिवर, उन्हें नमन, दे मोक्षमही॥

ॐ ह्रः अज्ञान-(व्युद्ग्राहित) गृहीत मिथ्यात्व त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२८३॥

जो पदार्थ का रूप न जाने, विष अमृत पहचान नहीं।
वही मूढ़ मिथ्यात्व त्यागकर, मुनि जैसा विज्ञान नहीं॥

ॐ ह्रः मूढ़गृहीत मिथ्यात्व त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२८४॥

अपनी मति से शास्त्रों को सुन, अर्थ करें दूषित खारा।
स्वाभाविक मिथ्यात्व त्यागकर, संत रूप जग हितकारा॥

ॐ ह्रः स्वाभाविक मिथ्यात्व त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२८५॥

सातों जो मिथ्यात्व छोड़कर, सात तत्त्व अभ्यास करें।
मोक्षमार्ग के वे अनुयायी, मुनि मम उर में वास करें॥

ॐ ह्रः सप्तविधमिथ्यात्व त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२८६॥

जग के जीव अनादिकाल से, तन को जीव मानते हैं।
जीव तत्त्व विषयक भूलों के, त्यागी मोक्ष जानते हैं॥

ॐ ह्रः जीवतत्त्वविषयक विभ्रम त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२८७॥

काया के ही जन्म मरण को, जन्म मरण तन का कहना।
भूल अजीव तत्त्व विषयक तज, सन्त पहनते शिव गहना॥

ॐ ह्रः अजीवतत्त्व विषयक विभ्रम त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२८८॥

रागादिक को सुख का कारण, मान मान रागी रोते।
वही भूल आस्त्रव विषयक तज, संत हमारे दुख खोते॥

ॐ ह्रः आस्त्रव तत्त्व विषयक विभ्रम त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२८९॥

राग कर्म शुभ कर्मोदय में, तथा द्वेष अशुभोदय में।
बंध तत्त्व विषयक भूले तज, संत रहें भाग्योदय में॥

ॐ ह्रः बंध तत्त्व विषयक विभ्रम त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२९०॥

हितकारी वैराग्य-ज्ञान को, कहें अहितकारी अपने।
वही भूल संवर विषयक तज, संत करें साँचे सपने॥

ॐ ह्रः संवर तत्त्व विषयक विभ्रमत्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२९१॥

निजी शक्ति को भूल-भूलकर, इच्छा निरोध ना करना।
भूल निर्जरा तत्त्व छोड़कर, मुनि पीते समता-रसना॥

ॐ ह्रः निर्जरा तत्त्व विषयक विभ्रम त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२९२॥

आकुलता मय मोक्ष मानना, भूल मोक्ष विषयक होती।
इसके त्यागी मुनि की पूजा, भक्तों का विभ्रम खोती॥

ॐ ह्रः मोक्षतत्त्व विषयक विभ्रम त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२९३॥

सात तत्त्व विषयक भूलें ही, भव-भव हमको भटकातीं।
इन्हें छोड़कर संत बताते, भ्रांति शांति को खा जाती॥

ॐ ह्रः सप्त तत्त्व विषयक विभ्रम त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२९४॥

तत्त्वों की उल्टी श्रद्धामय, जो विपरीत ज्ञान होता।
वो अगृहीत मिथ्याज्ञान तज, मुनि का ज्ञान मान खोता॥

ॐ ह्रः अगृहीत मिथ्याज्ञान त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२९५॥

अगृहीत मिथ्यादर्शन अरु, ज्ञान सहित जो चरित रहा।
वो अगृहीत मिथ्याचरित्र तज, जगत्पूज्य मुनि चरित महा॥

ॐ ह्रः अगृहीत मिथ्याचारित्र त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२९६॥

कुगुरु-देव-शास्त्रों की सेवा, गृहीत मिथ्यादर्शन को।
पोषण करती, उसके त्यागी, मुनि दें सम्यग्दर्शन को॥

ॐ ह्रः गृहीत मिथ्यात्व पोषक त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२९७॥

जो एकान्तवाद के पोषक, विषय सुखों को पुष्ट करें।
गृहीत मिथ्याज्ञान उसे तज, मुनि हमको संतुष्ट करें॥

ॐ ह्रः गृहीत मिथ्याज्ञान त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२९८॥

ख्यातिपूजालाभ के खातिर, भेदज्ञान बिन तप करना।
गृहीत मिथ्याचरित त्यागकर, संत झराते सुख झरना॥

ॐ ह्रः गृहीत मिथ्याचारित्र त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥२९९॥

बुरी आदते व्यसन कहातीं, उभय लोक के संकट दें।
व्यसन त्यागने मुनिवर हमको, जिनवाणी की संपद दें॥

ॐ ह्रः सप्तव्यसन त्याग उपदेशक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३००॥

बिना परिश्रम अधिक अधिक धन, पाने की रखना इच्छा।
जुआ खेलना त्याग करो रे, मुनिवर दे साँची शिक्षा॥

ॐ ह्रः द्यूत क्रीड़ा व्यसन त्याग उपदेशक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३०१॥

अण्डे मुर्गे माँस आदि का, सेवन माँसाहार कहा।
माँसाहार व्यसन त्यागी मुनि, हमें दया का द्वार महा॥

ॐ ह्रः माँसाहार त्याग उपदेशक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३०२॥

मादक द्रव्यों का सेवन तज, मद्य नाम का व्यसन तजें।
सब व्यसनों का मूल त्यागकर, मुनिवर जिन भगवान भजें॥

ॐ ह्रः मद्य व्यसन त्याग उपदेशक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३०३॥

वेश्यावृत्ती मन वच तनसे, त्याग करें शिवराग करें।
मुक्ति रमा को पाने वाले, मुनि से हम अनुराग करें॥

ॐ ह्रः वेश्यावृत्ती व्यसन त्याग उपदेशक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३०४॥

निजी मनोरंजन के कारण, शिकार करना जीवों का।
शिकार नामक व्यसन त्याग मुनि, हित करते भवि जीवों का॥

ॐ ह्रः शिकार व्यसन त्याग उपदेशक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३०५॥

अन्य जनों के धन आदिक का, हरना चोरी कहलाता।
चोरी नामक व्यसन त्याग मुनि, करवाते हैं यश गाथा॥

ॐ ह्रः चोरी व्यसन त्याग उपदेशक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३०६॥

बहिन बेटियाँ माता जैसी, संत मानते नारी को।
परनारी का व्यसन कभी भी, रुचे नहीं अनगारी को॥

ॐ ह्रः परस्त्री व्यसन त्याग उपदेशक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३०७॥

सुनो ! धर्म धारण के पहले, सप्त व्यसन का त्याग करो।
देव शास्त्र गुरुओं की सेवा, यथा लगन दिन रात रखो॥

ॐ ह्रः व्यसन त्याग उपदेशक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३०८॥

जो पदार्थ खाने लायक ना, अभक्ष्य वो ही संत कहें।
उनको तजकर करें साधना, क्रमिक भक्ष्य भी संत तजें॥

ॐ ह्रः अभक्ष्य त्याग उपदेशक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३०९॥

जिसको खाकर त्रस जीवों का, घात हुआ या कष्ट हुआ।
त्रस हिंसाकारक अभक्ष्य को, त्याग संत मन पुष्ट हुआ॥

ॐ ह्रः त्रसहिंसा कारक अभक्ष्य त्याग उपदेशक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३१०॥

बहु थावर जीवों का जिसके, भक्षण द्वारा घात हुआ।
उसके त्यागी मुनि को मेरा, अभिनन्दन को माथ हुआ॥

ॐ ह्रः बहुस्थावर हिंसाकारक अभक्ष्य त्याग उपदेशक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३११॥

जिसका भक्षण प्रमाद दे या, बुरी भावनाएँ लाता।
प्रमादकारक अभक्ष्य तजकर, मुनि मन आतम को ध्याता॥

ॐ ह्रः प्रमाद कारक अभक्ष्य त्याग उपदेशक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३१२॥

भक्षण योग्य वस्तु होने पर, अगर नहीं हितकारी तो।
उसको तजकर धर्म ध्यान में, मस्त रहे अनगारी हो॥

ॐ ह्रः अनिष्टकारक अभक्ष्य त्याग उपदेशक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३१३॥

धर्म और समाज में जिसका, भक्षण बुरा कहा भाई।
वो अनुपसेव्य अभक्ष्य तजकर,श्रमणपंथ है सुखदाई॥

ॐ ह्रः अनुपसेव्य अभक्ष्य त्याग उपदेशक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३१४॥

सकल पाप के मुनिवर त्यागी, करते जग कल्याण अहा।
उन जैसा कोई ना जग में, उन्हें भक्ति से शीश झुका॥

ॐ ह्रः सकल पाप त्याग उपदेशक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३१५॥

पाप त्याग कर पाप त्यागने, जो उपदेश सदा देते।
मुनि उपदेश पालकर जगजन, अपनी मंजिल पा लेते॥

ॐ ह्रः पाप त्याग उपदेशक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३१६॥

(हाकलिका)

संकल्पी हिंसा त्यागी, मुनिवर हैं शिव अनुरागी।
उन्हें नमनकर सुख पाओ, अपनी आतम को ध्याओ॥

ॐ ह्रः संकल्पी हिंसा त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३१७॥

घर गृहस्थी के कामों में, पाप हुआ जिन धामों में।
आरंभी हिंसा तज के, वन्दित मुनि आतम भज के॥

ॐ ह्रः आरंभी हिंसा त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३१८॥

खेती सेवा आदिक में, अघ जो व्यापारादिक में।
उद्योगी हिंसा त्यागी, मुनि पद में दुनियाँ भागी॥

ॐ ह्रः उद्योगी हिंसा त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३१९॥

धर्म आदि की रक्षा को, होने वाली हिंसा को।
छोड़ विरोधी हिंसा को, भजते संत अहिंसा को॥

ॐ ह्रः विरोधी हिंसा त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३२०॥

घात प्राणियों का करना, वही द्रव्य हिंसा तजना।
उसके त्यागी जिन-सन्ता, पूज्य हमारे भगवन्ता॥

ॐ ह्रः द्रव्य हिंसा त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३२१॥

भाव विकारी आतम के, रागादिक जो आ धमके।
वही भाव हिंसा छोड़ो, मुनिवर से नाता जोड़ो॥

ॐ ह्रः भाव हिंसा त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३२२॥

मनो वचन या फिर तन से, कृत कारित अनुमोदन से।
सारी हिंसा के त्यागी, जगत्पूज्य मुनि वैरागी॥

ॐ ह्रः सकल हिंसा पाप त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३२३॥

सुन करके जिन वचनों को, घात पाप हो प्राणों को।
झूठ नाम का पाप वही, पूर्ण रूप से तजें सुधी॥

ॐ ह्रः असत्य नामक पाप त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३२४॥

वस्तु दूसरों की जो हो, लेना देना उसका हो।
पाप वही चोरी जानो, उसके त्यागी मुनि मानो॥

ॐ ह्रः चोरी नामक पाप त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३२५॥

राग भाव की मर्यादा, - त्याग, राग करना ज्यादा।
वही कुशील पाप त्यागी, भजो संत जग वैरागी॥

ॐ ह्रः कुशील नामक पाप त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३२५॥

धरा धान्य की आसक्ति, त्याग परिग्रह लो मुक्ति।
मुक्त हुए उनको ध्याओ, तभी मुक्ति का घर पाओ॥

ॐ ह्रः परिग्रह नामक पाप त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३२६॥

पाँच पाप अपनाते जो, उभय लोक दुख पाते वो।
उसके त्यागी संत सुखी, उन्हें नमन हो खुशी -खुशी॥

ॐ ह्रः पाप भीरु मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३२७॥

अल्प कषायें दुखदानी, उनको नो कषाय मानी।
उनके त्यागी अनगारी, हमको दें शिवपुर गाड़ी॥

ॐ ह्रः नोकषाय त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३२८॥

हास्य नाम कर्मोदय से, मिलती हँसी शुभोदय से।
उसको भी जो मुनि छोड़े, उनसे हम नाता जोड़े॥

ॐ ह्रः हास्य नामक नोकषाय त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३२९॥

जिस कर्मोदय से प्राणी, विषय राग करता हानि।
खुशी-खुशी रति त्याग करो, यतिवर से अनुराग करो॥

ॐ ह्रः रति नामक नोकषाय त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३३०॥

अरति कर्म हो उदय जहाँ, जीवादिक से द्वेष वहाँ।
उसे त्याग कर संत मुनि, जगत्पूज्य हो महागुणी॥

ॐ ह्रः अरति नामक नोकषाय त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३३१॥

भय कर्मोदय जब होता, डर-डर कर प्राणी रोता।
निर्भय जो मुनिराज रहें, उन्हें नमन हम आज करें॥

ॐ ह्रः भय नामक नोकषाय त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३३२॥

जिस कर्मोदय से आतम, करे ग्लानि का कार्य अधम।
वही जुगुप्सा संत तजें, आओ उनकी जाप जपें॥

ॐ ह्रः जुगुप्सा नामक नोकषाय त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३३३॥

जो संबंधित नारी से, भाव मिले दुखकारी से।
जिससे नर से प्रीत बढ़े, वह तज मुनिवर मीत बढ़े॥

ॐ ह्रः स्त्री वेदनामक नोकषाय त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३३४॥

जिससे नर से संबंधी, भाव प्राप्त दुख अनुबंधी।
जिससे इच्छा नारी की, तज जय कह अनगारी की॥

ॐ ह्रः पुरुषवेद नामक नोकषाय त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३३५॥

भाव नपुंसक के पाना, नर नारी में रम जाना।
वेद नपुंसक के त्यागी, हम पूजें मुनि वैरागी॥

ॐ ह्रः नपुंसक वेद नामक नोकषाय, त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३३६॥

षट्-द्रव्यों के जो ज्ञाता, और उन्हीं के गुण ध्याता।
मुनिवर पूज्य श्रेष्ठ ज्ञानी, हमें शरण दे वरदानी॥

ॐ ह्रः षट्-द्रव्य ज्ञाता-ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३३७॥

ज्ञान और दर्शन वाली, रही चेतना सुखशाली।
जीव द्रव्य के मुनि ध्याता, हम गाएँ जिनकी गाथा॥

ॐ ह्रः जीव द्रव्य ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३३८॥

परस गंध आदिक वाला, पुद्गल द्रव्य दृश्यशाला।
पुद्गल द्रव्य संत ध्याते, मुनिदर्शन हमको भाते॥

ॐ ह्रः पुद्गल द्रव्य ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३३९॥

जीव और पुद्गल को जो, चलने में सहकारी हो।
धर्म द्रव्य का मुनि चिन्तन, करते-करते पाप हनन॥

ॐ ह्रः धर्म द्रव्य ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३४०॥

जीव और पुद्गल को जो, रुकने में सहकारी हो।
वही अधर्म द्रव्य ध्यानी, हरें हमारी हैरानी॥

ॐ ह्रः अधर्म द्रव्य ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३४१॥

सब द्रव्यों का आधारा, है आकाश द्रव्य न्यारा।
उसके चिन्तक अनगारी, उन्हें पूजते संसारी॥

ॐ ह्रः आकाश द्रव्य ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३४२॥

द्रव्यों का परिणमन जहाँ, काल द्रव्य दे मदद वहाँ।
सही सही ध्याता यति का, वन्दन द्वार मोक्ष गति का॥

ॐ ह्रः काल द्रव्य ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३४३॥

षट् द्रव्यों में मुख्य रहा, वो ही आतम द्रव्य कहा।
उसके ध्याता मुनि योगी, जगत्पूज्य शुद्ध-उपयोगी॥

ॐ ह्रः आत्म द्रव्य ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३४४॥

अस्तिकाय जो पाँच रहे, भू नभ में जो नाँच रहे।
बहुप्रदेशी द्रव्यों के, ध्याता मुनि, प्रभु भव्यों के॥

ॐ ह्रः पंचास्ति काय द्रव्य ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३४५॥

जो सब द्रव्यों में होते, छह सामान्य वही होते।
गुण सामान्य संत ध्याता, हमें दान दे गुण गाथा॥

ॐ ह्रः सामान्य गुण ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३४६॥

किसी विशेष द्रव्य में जो, मिलते विशेष गुण हैं वो।
विशेष गुण सोलह ध्याते, विशेष मुनि वो बन जाते॥

ॐ ह्रः विशेष गुण ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३४७॥

सब पर्यायें ध्याकरके, मुनिवर आतम पाकर के।
हमें दिशा हितकारी दें, हमें मुक्ति की गाड़ी दें॥

ॐ ह्रः पर्याय ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३४८॥

भाव वस्तु का जो रहता, तत्त्व वही आगम कहता।
सात तत्त्व का जो चिंतन, मुनिवर करके हरें भ्रमण॥

ॐ ह्रः सप्त तत्त्व ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३४९॥

जिसमें नहीं चेतना हो, तत्त्व अजीव वही मानो।
उसके चिंतक मुनिवर जो, हमें दिलायें शिवपुर को॥

ॐ ह्रः अजीव तत्त्व ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३५०॥

कर्म आगमन का द्वारा, आस्त्रव वो खारा-खारा।
वह चिन्तन कर मुनि तजते, आस्त्रव तजने हम भजते॥

ॐ ह्रः आस्त्रव तत्त्व ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३५१॥

जीव कर्म का मिल जाना, बंध तत्त्व उसको माना।
वह तजने यति यत्न करें, हमें भक्ति के रत्न वरें॥

ॐ ह्रः बंध तत्त्व ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३५२॥

आस्त्रव के रुक जाने को, संवर है सुख पाने को।
ऋषिवर संवर को करके, भक्तों को सुख दें भरके॥

ॐ ह्रः आस्त्रव तत्त्व ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३५३॥

कर्मों का आंशिक झड़ना, तत्त्व निर्जरा है गहना।
संत प्रवर उसके द्वारा, करते सुखी जगत् सारा॥

ॐ ह्रः निर्जरा तत्त्व ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३५४॥

कर्मों का सब झड़ना ही, मोक्ष तत्त्व वह भजना ही।
लोक शिखर पर वे वसते, मुनिवर जो आतम भजते॥

ॐ ह्रः मोक्ष तत्त्व ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३५५॥

तत्त्व ध्यान सबसे अच्छा, नई दिशा दे पथ सच्चा।
उनमें आतम मुख्य रहा, सबसे सच्चा सौख्य कहा॥

ॐ ह्रः आत्म तत्त्व ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३५६॥

सात तत्त्व ही क्यों होते, सात प्रश्न जिनके होते।
समाधान उन सातों का, जवाब दें उन बातों का॥

ॐ ह्रः सहेतुक सप्त तत्त्व ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३५७॥

कौन यहाँ दुख पाता हो, ऐसा प्रश्न उठाता जो।
जीव तत्त्व उसका उत्तर, भक्तों को दें श्री मुनिवर॥

ॐ ह्रः दुःख भोक्ता जीव तत्त्व चिन्तक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३५८॥

किससे दुख पाता प्राणी, ऐसी शंका की वाणी।
समाधान अजीव उसका, मुनिवर पथ देते उसका॥

ॐ ह्रः दुःखदाता अजीव तत्त्व चिन्तक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३५९॥

किस कारण से दुख आता, ऐसा प्रश्न जिन्हें भाता।
उसका उत्तर आस्त्रव दें, मुनिवर हमको आश्रय दें॥

ॐ ह्रः दुःख हेतु आस्रव तत्त्व चिंतक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३६०॥

किससे दुख बढ़ता जाए, शंका ऐसी उठ आए।
समाधान में बंध कहें, संत सदा दुख द्वन्द्व हरें॥

ॐ ह्रः दुःख विकासक बंधतत्त्व चिंतक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३६१॥

दुख कैसे रोका जाए, प्रश्न जिन्हें यह उलझाए।
उत्तर में संवर कहते, दुख पीड़ा मुनिवर हरते॥

ॐ ह्रः दुःख निरोधक संवर तत्त्व चिंतक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३६२॥

पूर्ण दूर दुख कैसे हो, प्रश्न जिन्हें भी ऐसे हों।
कहें निर्जरा उत्तर में, मुनिवर योग अनुत्तर हैं॥

ॐ ह्रः दुःख निवारक निर्जरा तत्त्व चिंतक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३६३॥

दुख से रहित अवस्था क्या, शंका जिनकी रही यथा।
समाधान में मोक्ष कहा, मुनि पाएंगे मोक्ष अहा॥

ॐ ह्रः दुःख रहित-अवस्था मोक्षतत्त्व चिंतक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३६४॥

कर्म सहित जो जीव रहे, वो संसारी जीव कहे।
अगर न बनना संसारी, तो पूजो गुरु अनगारी॥

ॐ ह्रः संसारी जीव ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३६५॥

कर्म रहित हैं आतम जो, मुक्त जीव परमातम वो।
सिद्धातम बनना चाहो, तो मुनिवर के गुण गाओ॥

ॐ ह्रः मुक्त जीव ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३६६॥

दो से पंचेन्द्री वाले, वो त्रस जीव कहे सारे।
अगर नहीं त्रस बनना तो, ऋषिवर का पथ चलना हो॥

ॐ ह्रः त्रस जीव ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३६७॥

एक परस इन्द्री जिनकी, एकेन्द्री संज्ञा उनकी।
थावर के दुख मुनि ध्याते, तभी मुक्ति उनसे पाते॥

ॐ ह्रः स्थावर जीव ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३६८॥

मन बिन जीव असंज्ञी हैं, दुनियाँ बड़ी दुरंगी है।
उनके कष्ट विचारो तो, मुनि को आप पुकारो तो॥

ॐ ह्रः असंज्ञी जीव ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३६९॥

मन से सहित जीव सारे, संज्ञी जीव बड़े न्यारे।
शिक्षा दीक्षा पा जाते, मुनियों के गुण भी गाते॥

ॐ ह्रः संज्ञी जीव ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३७०॥

जिनमें रत्नत्रय गुण की, क्षमता हो उद्घाटन की।
भव्य जीव वो महामहा, मुनिवर जैसा कौन कहाँ ?॥

ॐ ह्रः भव्य जीव ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३७१॥

जिनमें रत्नत्रय गुण की, क्षमता ना उद्घाटन की।
वही अभव्य जीव दुखिया, उनके ध्याता मुनि सुखिया॥

ॐ ह्रः अभव्य जीव ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३७२॥

तन को जो समझे चेतन, अरु चेतन में लगे न मन।
वही जीव बहिरातम हैं, मुनिवर हरते सब गम हैं॥

ॐ ह्रः बहिरात्मा जीव ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३७३॥

तन आतम हैं जुदा-जुदा, जो जन माने यथा कथा।
अन्तर आतम वो प्राणी, मुनिवर ध्याते जिनवाणी॥

ॐ ह्रः अन्तरात्मा जीव ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३७४॥

अन्तर बाह्य परिग्रह को, जो त्यागे सब आग्रह को।
मुनिवर ध्याते आतम जो, उत्तम अन्तर आतम वो॥

ॐ ह्रः उत्तम-अन्तरात्मा जीव ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३७५॥

प्रमत्त जो मुनिवर न्यारे, अथवा देशव्रती सारे।
मध्यम अन्तर आतम वो, उनके चिन्तक मुनिजन हो॥

ॐ ह्रः मध्यम-अन्तरात्मा जीव ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३७६॥

अविरत सम्यक्दृष्टी जो, जघन्य अन्तर आतम वो।
मुनियों के जो अनुगामी, उनके ध्याता मुनि स्वामी॥

ॐ ह्रः जघन्य-अन्तरात्मा जीव ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३७७॥

सर्वश्रेष्ठ जो जीव दशा, परमातम वो पूज्य लसा।
उनको पूजो सुख पाओ, ध्याता मुनि के गुण गाओ॥

ॐ ह्रः परमात्मा ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३७८॥

घातिकर्म बिन अर्हन्ता, देह सहित जिन भगवन्ता।
पूज्य सकल परमातम वो, नमन करें हम मुनिजन को॥

ॐ ह्रः सकल परमात्मा ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३७९॥

सभी कर्म बिन सिद्ध रहे, तथा देह बिन शुद्ध रहे।
साध्य निकल परमातम हैं, मुनिपद पावन साधन हैं॥

ॐ ह्रः निकल परमात्मा ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३८०॥

मात-पिता रज वीर्य बिना, होना काया की रचना।
सम्मूर्च्छन वह जन्म रहा, उससे डरते सन्त महा॥

ॐ ह्रः सम्मूर्च्छन जन्म-निवारक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३८१॥

मात-पिता रज वीर्य मिले, नारि उदर में जीव पले।
गर्म जन्म वह दुखदायी, सन्त हरें वह दुख भाई॥

ॐ ह्रः गर्भजन्म निवारक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३८२॥

जन्म नारकी देवों का, जिससे हो बहुभेदों का।
वो उपपाद जन्म जानो, उसके नाशक मुनि मानो॥

ॐ ह्रः उपपादजन्म निवारक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३८३॥

राग-द्वेष भावों द्वारा, कर्मागमन हुआ खारा।
भावास्त्रव रोके मुनिवर, उनकी पूजा है सुखकर॥

ॐ ह्रः भावास्त्रव निवारक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३८४॥

ज्ञानावरणादिक सारे, द्रव्यकर्म दुख के द्वारे।
द्रव्यास्त्रव वो संत हरें, हमको वो शिव पंथ वरें॥

ॐ ह्रः द्रव्यास्त्रव निवारक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३८५॥

तीन योग शुभ जो भाते, कर्म उसी से जो आते।
पुण्यास्त्रव हमको प्यारा, संत भक्ति उसका द्वारा॥

ॐ ह्रः पुण्यास्त्रवदाता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३८६॥

तीनों अशुभ योग जब हों, कर्मागमन बुरे तब हों।
पापास्त्रव दुख के दाता, मुनिपूजा दे सुख साता॥

ॐ ह्रः पापास्त्रव निवारक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३८७॥

राग-द्वेष आदिक सारे, मिलें आतमा से खारे।
भावबंध वह संत तजें, संतों को हम रोज भजें॥

ॐ ह्रः भावबंध निवारक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३८८॥

योग्य कर्म पुद्गल क्रम से, एकमेक हो चेतन से।
द्रव्यबंध वह दुखी करे, संत कथा जग सुखी करे॥

ॐ ह्रः द्रव्यबंध निवारक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३८९॥

लिया सहारा धर्मों का, आना रुकता कर्मों का।
वही भाव संवर समझो, करें साधना मुनि उसको॥

ॐ ह्रः भावसंवर कर्त्ता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३९०॥

द्रव्य कर्म जिन साधन से, रुक जाते हैं आवन से।
वही द्रव्य संवर होता, मुनि वन्दन उसको खोता॥

ॐ ह्रः द्रव्य संवर कर्त्ता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३९१॥

संवर के सातों साधन, अपनाकर साधक मुनिजन।
अपना निजी साध्य पाते, लोक शिखर पर वस जाते॥

ॐ ह्रः सप्त विध संवर कर्त्ता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३९२॥

(अर्द्ध ज्ञानोदय)

साधु जनों का वन्दन करके, गलित पाप ऐसे होता।
छिद्र सहित हाथों में जैसे, पानी झर-झर कर रोता॥

ॐ ह्रः पापगालक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३९३॥

वीतराग मुनि संतों के मुख, पद्मराग मणि के जैसे।
मुनि-दर्शन से भक्त जनों के, पाप नष्ट ना हो कैसे॥

ॐ ह्रः पद्मरागमणिसम मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३९४॥

संत तपस्वी हैं तेजस्वी, तेज सूर्य जैसा चमके।
मोह-अंध दर्शन से नशता, हृदय कमल खिलकर महके॥

ॐ ह्रः सूर्यसम मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३९५॥

चाँद दागमय, बेदागी मुनि, धर्मामृत करते बरसा।
भवदुख नाशक उन मुनिवर के, दर्शन से मम मन हरषा॥

ॐ ह्रः चन्द्रसम मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३९६॥

ज्ञानानंद स्वरूपमयी जो, मंदिर है परमातम के।
परमातम को पाने उनकी, पूजन को हम आ धमके॥

ॐ ह्रः ज्ञानानंद स्वरूपी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३९७॥

मुनिवर शरण दान जो करते, करुणा भाव दिखा करके।
परमशरण को हम पा जायें, चरण धूल सिर पर धरके॥

ॐ ह्रः शरणदाता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३९८॥

भवसागर में डूबे जन को, तारणतरण जहाज बने।
उनसा कोई और न दूजा, उन्हें हमारे नमन घने॥

ॐ ह्रः तारणतरणजहाज मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥३९९॥

खाने को संसार दौड़ता, एक नहीं रक्षक मेरा।
तुम्हें नमन ओ ! रक्षक मुनिवर, हरो हमारा भव फेरा॥

ॐ ह्रः रक्षक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४००॥

(सुविद्या)

परिषह जय से कर्म निर्जरा, बढ़े धर्म जिन शान।
आस्त्रव रुकता संवर होता, संत करें कल्याण॥

ॐ ह्रः जिनधर्म प्रभावक परिषह विजयी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४०१॥

संत करें जो परिषह जय वो, श्रद्धा के आधार।
भाग्य विधाता शक्ति प्रदाता, पूजें सब संसार॥

ॐ ह्रः शक्ति प्रदाता परिषह विजयी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४०२॥

मुनि - चर्या में सर्व काल में, त्यागा सब सावद्य।
सामायिक चारित्र संत को, दिला रहा सुख सद्य॥

ॐ ह्रः सामायिक चारित्र पालक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४०३॥

दोष व्रतों के हटा व्रतों में, थिर हो जाना आप।
छेदोपस्थापना चरित्र वह, मुनिवर करते जाप॥

ॐ ह्रः छेदोपस्थापना चारित्र पालक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४०४॥

जो चारित्रपालने से मुनि, हों प्राणी वध मुक्त।
योग्य समय दो कोस चले नित, आत्म शुद्धि वह उक्त॥

ॐ ह्रः परिहार विशुद्धि चारित्र पालक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४०५॥

जिस चारित्र में लोभ नाम की, हो अति सूक्ष्म कषाय।
उसके धारी मुनि दर्शन कर, हर्षित मन वच काय॥

ॐ ह्रः सूक्ष्मसाम्पराय चारित्र पालक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४०६॥

मोहनीय उपशम या क्षय से, होता जो चारित्र।
यथाख्यात आराधक पालक, मुनिवर परम पवित्र॥

ॐ ह्रः यथाख्यात चारित्र पालक (आराधक) मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४०७॥

जहाँ संयमासंयम ना हो, ना संयम का नाम।
वही असंयम त्याग संतजी, तजने दें पैगाम॥

ॐ ह्रः असंयम त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४०८॥

सम्यग्दर्शन तो रहता पर, एक देश अघ त्याग।
वही संयमासंयम तजकर, मुनि संयम अनुराग॥

ॐ ह्रः संयमासंयम त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४०९॥

आतम के जिन भावों द्वारा, झड़ते आंशिक कर्म।
भाव निर्जरा कर्त्ता मुनिवर, पाते हैं शिवशर्म॥

ॐ ह्रः भाव निर्जरा कर्त्ता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४१०॥

कर्म प्रदेशों का आतम से, हो जाना ही दूर।
द्रव्य निर्जरा कर्त्ता मुनिवर, बाँटे सुख की पूर॥

ॐ ह्रः द्रव्य निर्जरा कर्त्ता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४११॥

जो सविपाक निर्जरा होती, झड़े कर्म फल देय।
मोक्षमार्ग में उपयोगी ना, मुनि समझें वह हेय॥

ॐ ह्रः सविपाक निर्जरा त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४१२॥

जो अविपाक निर्जरा करने, साधन करें विशेष।
मोक्ष, मोक्षपथ चलकर उनको, बनना है परमेश॥

ॐ ह्रः अविपाक निर्जरा कर्त्ता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४१३॥

सात तत्त्व में पुण्य पाप का, जब हो जाता मेल।
नौ पदार्थ का जग में देखें, मुनिवर विरला खेल॥

ॐ ह्रः नवपदार्थ ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४१४॥

नौ पदार्थ में जीव सदा ही, मुख्य कहें मुनिराज।
जीव ध्यान कर महा संतजी, पाते हैं शिवराज॥

ॐ ह्रः जीवपदार्थ ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४१५॥

जो व्यवहार तथा निश्चय का, करें समन्वय कार्य।
उन्हें समझ सर्वज्ञ आज का, पूजें मुनिवर आर्य॥

ॐ ह्रः उभय मोक्षमार्ग प्रकाशक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४१६॥

देव शास्त्र गुरु पर श्रद्धा या, तत्त्वों पर श्रद्धान।
दोष रहित वो आठ अंगमय, सम्यग्दर्शन ज्ञान॥

ॐ ह्रः व्यवहार सम्यग्दृष्टि मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४१७॥

तत्त्व पदार्थ अस्तिकायों में, जीव द्रव्य है मुख्य।
आत्मध्यान है निश्चय, सम्यक्-दर्शन देता सौख्य॥

ॐ ह्रः निश्चय सम्यग्दृष्टि मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४१८॥

पर उपदेश बिना जो होता, पिछले भव संस्कार।
संत निसर्गज सम्यग्दर्शन, धार चलें भव पार॥

ॐ ह्रः निसर्गज सम्यग्दृष्टि मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४१९॥

गुर्वादिक उपदेशों से जो, सम्यग्दर्शन होय।
वही अधिगमज सम्यग्दर्शन, संत करा दें मोय॥

ॐ ह्रः अधिगमज सम्यग्दृष्टि मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४२०॥

सात प्रकृतियाँ उपशम कर जो, सम्यग्दर्शन आय।
उपशम सम्यग्दर्शन से मुनि, श्रद्धा दीप जलाय॥

ॐ ह्रः उपशम सम्यग्दृष्टि मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४२१॥

सम्यक् प्रकृति उदय काल जो, सम्यग्दर्शन पाय।
वही क्षयोपशम सम्यग्दर्शन, मुनिवर जी चितलाय॥

ॐ ह्रः क्षयोपशम सम्यग्दृष्टि मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४२२॥

सात प्रकृतियों के क्षय से जो, सम्यग्दर्शन होय।
क्षायिक सम्यग्दर्शन से मुनि, शिवगामी झट होय॥

ॐ ह्रः क्षायिक सम्यग्दृष्टि मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४२३॥

शुभ उपयोग सहित जो मुनिवर, करे धर्म अनुराग।
सराग सम्यग्दर्शन वो है, गुणधर से चित लाग॥

ॐ ह्रः सराग सम्यग्दृष्टि मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४२४॥

प्रशम भाव से परिपूरित मुनि, तीव्र कषायें जीत।
रत्नत्रय का पालन करते, मन्द कषायी मीत॥

ॐ ह्रः प्रशम भाव पूरित मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४२५॥

देख दीन संसार दशा जो, सदा रहें भयभीत।
वो संवेग धारकर मुनिवर, करें मुक्ति से प्रीत॥

ॐ ह्रः संवेग भाव पूरित मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४२६॥

कर्म कर्म-फल जीव आदि में, जिनका है विश्वास।
मुनि आस्तिक्य भाव के धारक, श्रद्धा के आवास॥

ॐ ह्रः आस्तिक्य भाव पूरित मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४२७॥

जीवमात्र पर दया भाव का, बहता करुणा स्रोत।
वही भाव अनुकम्पा समझो, धारें यति शिव पोत॥

ॐ ह्रः अनुकम्पाभाव पूरित मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४२८॥

रहे शुद्ध उपयोगों सह जो, सम्यग्दर्शन शुद्ध।
वीतराग सम्यग्दर्शन वह, धारे संत विशुद्ध॥

ॐ ह्रः वीतराग सम्यग्दृष्टि मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४२९॥

जिनवर के उपदेश मात्र की, आज्ञा ही स्वीकार।
आज्ञा सम्यग्दर्शन धारी, मुनि की जय जयकार॥

ॐ ह्रः आज्ञा सम्यक्त्व धारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४३०॥

मोक्षमार्ग ही श्रेयस्कर है, ऐसा हो श्रद्धान।
वही मार्ग सम्यक्त्व साधकर, मुनि करते कल्याण॥

ॐ ह्रः मार्ग सम्यक्त्वधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४३१॥

कथा शलाका पुरुषों की सुन, जो श्रद्धा उत्पन्न।
वो ही है उपदेश नाम का, सम्यग्दर्शन चिह्न॥

ॐ ह्रः उपदेश सम्यक्त्वधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४३२॥

मुनि चारित्र निरूपक श्रुत को, सुन जो हो श्रद्धान।
वही सूत्र सम्यक्त्व भक्त से, बनवा दे भगवान॥

ॐ ह्रः सूत्र सम्यक्त्वधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४३३॥

करणानुयोग ग्रंथों को सुनकर, जो श्रद्धा अवतार।
वही बीज सम्यक्त्व धारकर, बहती करुणा धार॥

ॐ ह्रः बीज सम्यक्त्वधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४३४॥

जीवादिक संक्षिप्त रूप सुन, श्रद्धा का जो भाव।
वह संक्षेप नाम का न्यारा, है सम्यक्त्व प्रभाव॥

ॐ ह्रः संक्षेप सम्यक्त्वधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४३५॥

जीवादिक विस्तार रूप सुन, श्रद्धा जो लहराय।
वह विस्तार नाम का सुनलो, मुनि-सम्यक्त्व सहाय॥

ॐ ह्रः विस्तार सम्यक्त्वधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४३६॥

बिना सुने बस अर्थ ग्रहणकर, श्रद्धा का जो नाम।
श्रेष्ठ अर्थ सम्यक्त्व उसी से, संत रूप निष्काम॥

ॐ ह्रः अर्थ सम्यक्त्वधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४३७॥

श्रुतकेवलि का सम्यग्दर्शन, कहलाता अवगाढ़।
उनके पूजक हरें जगत की, अज्ञानों की बाढ़॥

ॐ ह्रः अवगाढ़ सम्यक्त्वधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४३८॥

पूज्य केवली भगवन् का जो, सम्यग्दर्शन रूप।
वही परम अवगाढ़ नाम का, जिन सम्यक्त्व स्वरूप॥

ॐ ह्रः परम-अवगाढ़ सम्यक्त्व ध्याता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४३९॥

धर्मबुद्धि से गिरि से गिरना, सरिता में हो स्नान।
आग जलन ये लोक मूढ़ता, तजते संत महान॥

ॐ ह्रः लोक मूढ़ता त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४४०॥

मोही देवी देव पूजना, पाने को वरदान।
देवमूढ़ता तजकर मुनिजी, करें स्वपर कल्याण॥

ॐ ह्रः देव मूढ़ता त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४४१॥

हिंसक पाखण्डी साधक का, करना ही सत्कार।
गुरूमूढ़ता त्यागी साधक, पहने सुख का हार॥

ॐ ह्रः गुरु मूढ़ता त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४४२॥

तीन मूढ़ता रहित रहा जो, सम्यग्दर्शन धार।
यथा संत ही जिनवाणी के, पावन पूज्य दुलार॥

ॐ ह्रः त्रय मूढ़ता त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४४३॥

भौतिक उपलब्धी पलभर की, पाके हो जो गर्व।
कहा वही मद आठ भेद मय, यतिवर त्यागे सर्व॥

ॐ ह्रः अष्टमद त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४४४॥

बढ़ा - चढ़ा जो ज्ञान प्राप्त कर, करना ही अभिमान।
उसी ज्ञान मद के त्यागी जी, पाते केवलज्ञान॥

ॐ ह्रः ज्ञानमद त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४४५॥

अपनी जय - जयकार श्रवण कर, आना जोश घमण्ड।
वो ही पूजापद तजकर के, मुनि हैं रतनकरण्ड॥

ॐ ह्रः पूजा मद त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४४६॥

देख पिता दादा का वैभव, अहंकार का भाव।
कुलमद तज वो गुरुकुल वाले, मुनि का गजब प्रभाव॥

ॐ ह्रः कुल मद त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४४७॥

ठाट देख मातुल नाना का, मन जाता जब फूल।
वही जातिमद त्यागी ऋषिवर, पाते रमा समूल॥

ॐ ह्रः जाति मद त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४४८॥

भीम सरीखा पौरुष पाकर, हुआ गर्व मय कन्त।
वही त्यागकर बलमद मुनिवर, पाते सुबल अनन्त॥

ॐ ह्रः बल मद त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४४९॥

श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पाकर उड़ना, ऊँचे गगन विशाल।
त्याग ऋद्धिमद संत हमारे, करते सदा कमाल॥

ॐ ह्रः ऋद्धि मद त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४५०॥

घोर तपस्या करके कहना, मुझ जैसा ना और।
वो ही तपमद त्यागी साधक, भक्तों की सुख ठौर॥

ॐ ह्रः तपमद त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४५१॥

अतिशय सुन्दर तन पा कहना, मुझसा कहीं न रूप।
वही रूपमद तजकर यतिवर, प्राप्त करें चिद्रूप॥

ॐ ह्रः रूपमद त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४५२॥

कठिन काम है मद को तजकर, करना निर्मद आत्म।
निर्मद मुनिवर जग पूजित हैं, सदा शुद्ध परमात्म॥

ॐ ह्रः निर्मद मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४५३॥

कही गयी जिनवर वाणी में, करना ही संदेह।
शंका दोष वही तजकर मुनि, चलें मुक्ति के गेह॥

ॐ ह्रः शंका दोष त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४५४॥

धर्म-कर्म से संसारिक सुख, पाने की जो आश।
कांक्षा नामक दोष त्याग कर, संत धरे संन्यास॥

ॐ ह्रः कांक्षा दोष त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४५५॥

रत्नत्रय धारी संतों की, काया देख मलीन।
ग्लानी करना विचिकित्सा को, त्यागे संत प्रवीण॥

ॐ ह्रः विचिकित्सा दोष त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४५६॥

साँचा तत्त्व जान न पाना, मूढ़दृष्टि वह दोष।
उसके त्यागी मुनिवर मेरा, हरें मूढ़ता कोश॥

ॐ ह्रः मूढ़दृष्टि दोष त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४५७॥

कर्मोदय से धर्मीजन के, देना दोष उघाड़।
दोष अनुपगूहन वो तजकर, मुनिवर दें सुख बाढ़॥

ॐ ह्रः अनुपगूहन दोष त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४५८॥

धर्म राह से विचलित जन का, थिर करना ना धर्म।
अस्थिति करण दोष वो तजकर, मुनिवर का उर नर्म॥

ॐ ह्रः अस्थितिकरण दोष त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४५९॥

सहधर्मी से ईर्ष्या करना, अवात्सल्य वह दोष।
उसके त्यागी संत हमारे, तन मन के संतोष॥

ॐ ह्रः अवात्सल्य दोष त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४६०॥

बुरा आचरण करके जिनपथ, करना दूषित धर्म।
अप्रभावना दोष रहित जो, संत चरण शिवशर्म॥

ॐ ह्रः अप्रभावना दोष त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४६१॥

शंकादिक आठों दोषों के, त्यागी श्री मुनिराज।
भवसागर से पार उतरने, तारणतरण जहाज॥

ॐ ह्रः शंकादिक अष्ट दोष त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४६२॥

आठ अंगमय सम्यग्दर्शन, दोष रहित सुख द्वार।
उसके धारी संत हमारे, हरें कर्म के भार॥

ॐ ह्रः अष्टांग सम्यग्दर्शनधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४६३॥

जिनपथ या जिनपन्थी जन पर, ना शंका की सैर।
धरे अंग निःशंकित वह मुनि, जैसे दाँया पैर॥

ॐ ह्रः निःशंकित अंगधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४६४॥

दोनों भव के भोग न चाहें, चाहें सब की खैर।
धरे अंग निःकांक्षित वह मुनि, जैसे बाँया पैर॥

ॐ ह्रः निःकांक्षित अंगधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४६५॥

घृणा जनक तन धर्मी का लख, नहीं घृणा की बात।
निर्विचिकित्सा अंग धरे मुनि, जैसे बाँया हाथ॥

ॐ ह्रः निर्विचिकित्सा अंगधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४६६॥

बाह्य प्रलोभन में न फँसना, या तजना ज्यों बीट।
अमूढ़दृष्टि अंग धरे मुनि, जैसे तन में पीठ॥

ॐ ह्रः अमूढदृष्टि अंगधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४६७॥

पर अवगुण अपने गुण ढ़कना, यही नीव का स्तंभ।
यह उपगूहन अंगधार मुनि, तन में यथा नितम्ब॥

ॐ ह्रः उपगूहन अंगधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४६८॥

धर्ममार्ग से विचलित जन को, धर्म दिखा दें साथ।
संत धरें थितिकरण अंग वो, जैसे दाँया हाथ॥

ॐ ह्रः स्थितिकरण अंगधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४६९॥

सहधर्मी से गौबछड़े सम, निष्छल होना प्रेम।
संत धरें वात्सल्य अंग वो, ज्यों तन में उर हेम॥

ॐ ह्रः वात्सल्य अंगधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४७०॥

प्रचार प्रसार हो जिनपथ का, जीव मात्र लें सीख।
प्रभावना वो अंग धरे मुनि, जैसे तन में शीश॥

ॐ ह्रः प्रभावना अंगधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४७१॥

अनायतन छह त्याग संत जी, स्वयं आयतन रूप।
जिसको दुनियाँ झुके भक्ति से, वो त्रिभुवन के भूप॥

ॐ ह्रः षडानायतन त्यागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४७२॥

मोक्षमार्ग का प्रथम चरण है, सम्यग्दर्शन शुद्ध।
संत शिरोमणि इसके धारी, शान रहे शिव शुद्ध॥

ॐ ह्रः शुद्ध सम्यग्दर्शन धारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४७३॥

पाँच पाँच ही महाव्रतों की, श्रेष्ठ भावना भाएँ।
उनके भावक मुनिवर जी की, पूजा आज रचाएँ॥

ॐ ह्रः पंचविंशति भावनाभावक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४७४॥

एक तरफ हो सम्यग्दर्शन, अन्य तरफ संसार।
तो भी सम्यग्दर्शनधारी, संत चले भव पार॥

ॐ ह्रः अमूल्य सम्यग्दर्शनधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४७५॥

(अर्द्ध विष्णु)

पाँच पाँच अतिचार रहित जो, सम्यग्दर्शन है।
वही रतन वा उसके धारी, मुनि को वन्दन है॥

ॐ ह्रः अतिचार रहित सम्यग्दर्शनधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४७६॥

जो जैसा है उसको वैसा, ज्ञान जानता जो।
सम्यग्ज्ञान उसी का वन्दक, पाप नाशता हो॥

ॐ ह्रः सम्यग्ज्ञानधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४७७॥

पंचेन्द्री वा मन से जो हो, सम्यग्ज्ञान महा।
परोक्ष सम्यग्ज्ञान संत का, सम्यग्दीप अहा॥

ॐ ह्रः परोक्ष सम्यग्ज्ञानधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४७८॥

बिना बाह्य आलम्बन से जो, सम्यग्ज्ञान हुआ।
वो ही है प्रत्यक्ष ज्ञान जो, संत स्वरूप छुआ॥

ॐ ह्रः प्रत्यक्ष सम्यग्ज्ञानधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४७९॥

सम्यग्ज्ञान अंग आठों मय, ऋषिवर जो धारें।
वो अज्ञान अंध को हरकर, भक्तों को तारें॥

ॐ ह्रः अष्टांग सम्यग्ज्ञानधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४८०॥

व्यंजन मात्रा शब्द स्वरों को, सदा शुद्ध पढ़ना।
शब्दाचार नाम का मुनि का, ज्ञान-अंग गहना॥

ॐ ह्रः शब्दाचार सम्यग्ज्ञानांगधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४८१॥

मूलग्रंथ के योग्य अर्थ को, समझ-समझ पढ़ना।
अर्थाचार नाम का मुनि का, ज्ञान-अंग गहना॥

ॐ ह्रः अर्थाचार सम्यग्ज्ञानांगधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४८२॥

शुद्धोच्चारण योग्य अर्थमय, मूल ग्रन्थ पढ़ना।
वो तदुभयाचार मुनिवर का, ज्ञान-अंग गहना॥

ॐ ह्रः तदुभयाचार सम्यग्ज्ञानांगधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४८३॥

शास्त्र पठन के योग्य काल में, शास्त्रों का पढ़ना।
कालाचार नाम का मुनि का, ज्ञान-अंग गहना॥

ॐ ह्रः कालाचार सम्यग्ज्ञानांगधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४८४॥

द्रव्यादिक की ग्रंथ शुद्धि मय, विनय सहित पढ़ना।
विनयाचार नाम का मुनि का, ज्ञान-अंग गहना॥

ॐ ह्रः विनयाचार सम्यग्ज्ञानांगधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४८५॥

शास्त्र नियममय और अर्थ को, बार-बार रटना।
वो उपधानाचार संत का, ज्ञान-अंग गहना॥

ॐ ह्रः उपधानाचार सम्यग्ज्ञानांगधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४८६॥

विनय ज्ञान उपकरणों का कर, गुरु आदर करना।
वो बहुमानाचार संत का, ज्ञान-अंग गहना॥

ॐ ह्रः बहुमानाचार सम्यग्ज्ञानांगधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४८७॥

जिससे ज्ञान मिला है उनका, नाम छिपाना ना।
वो अनिह्नवाचार संत का, ज्ञान-अंग गहना॥

ॐ ह्रः अनिह्नवाचार सम्यग्ज्ञानांगधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४८८॥

करो हमारी इच्छा पूरी, सम्यक् फल चाहें।
सच्चे देवशास्त्र गुरुओं की, श्रद्धा मन लायें॥

ॐ ह्रः भक्ति फल प्रदाता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४८९॥

बिना तुम्हारे मुनिवर मेरे, धर्म कर्म सब व्यर्थ।
दास तुम्हारे चरणों का मैं, चरण तुम्हारे सार्थ॥

ॐ ह्रः तीर्थरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४९०॥

जनम जनम के पाप हमारे, भव-भव के दुख रोग।
हे मुनिवर ! तेरे दर्शन से, नश जाते भव योग॥

ॐ ह्रः भवदुःखनाशक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४९१॥

मेरे नयना मुनि दर्शन कर, सफल हुए हैं आज।
आकुलता का दुख मिट जाये, ऐसा दो आभास॥

ॐ ह्रः तुष्टिकारक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४९२॥

महा-महा मेरा भवसागर, चुल्लूभर लगता।
मुनिवर तेरे दर्शन करके, दुख उल्लू भगता॥

ॐ ह्रः भवसागर शोषक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४९३॥

जिनकी कोई तिथि ना होती, अतिथि पूज्य भाते।
वही रहे आदर्श हमारे, गुरु महिमा गाते॥

ॐ ह्रः अतिथि मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४९४॥

कारण जो संसार चक्र का, कहलाता अज्ञान।
उसके हर्त्ता संत जनों को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रः अज्ञानहर्त्ता मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४९५॥

देवशास्त्र गुरु परम पूज्य को, पूजें श्रद्धा धार।
चलते फिरते धर्म तीर्थ की, जय-जय बारम्बार॥

ॐ ह्रः देवशास्त्रगुरु-उपासक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४९६॥

निज पर के कल्याण शांति को, रहते जो बेचैन।
उनके पूजक पुजें सदा ही, बनकर साँचे जैन॥

ॐ ह्रः निजपर कल्याणक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४९७॥

गुरुआज्ञा को सदा पालने, अर्पित जिनका सर्व।
वही शिष्य तो धन्य-धन्य हैं, उन्हें नमें हम सर्व॥

ॐ ह्रः गुरुआज्ञापालक मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४९८॥

मोह ईश बन पुजे सदा ही, करके गाफिल लोक।
मोहबली जो वश में करते, उन्हें दिए हम धोक॥

ॐ ह्रः निर्मोही मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥४९९॥

राग आग से जलता आया, आतम वैभव-सार।
राग-रहित यतिराज संत का, रागी यह संसार॥

ॐ ह्रः विरागी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५००॥

अवधिज्ञान की ऋद्धि धारकर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः अवधिज्ञान ऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५०१॥

मनःपर्ययज्ञान ऋद्धिधर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः मनःपर्ययज्ञान ऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५०२॥

केवलज्ञान ऋद्धिधर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः केवलज्ञान ऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५०३॥

बीज बुद्धि जो ऋद्धिधार कर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः बीजबुद्धि ऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५०४॥

कोष्टबुद्धि जो ऋद्धिधारकर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः कोष्टबुद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५०५॥

पदानुसारी बुद्धि ऋद्धिधर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः पदानुसारिणि बुद्धिऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५०६॥

बुद्धिऋद्धि संभिन्नश्रोतृधर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः संभिन्नश्रोतृ बुद्धिऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५०७॥

दूरास्वादन बुद्धि ऋद्धिधर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः दूरास्वादित्व बुद्धिऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५०८॥

दूरस्पर्शत्व बुद्धि ऋद्धिधर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः दूरस्पर्शत्व बुद्धिऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५०९॥

दूरघ्राणत्व बुद्धि ऋद्धिधर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः दूरघ्राणत्व बुद्धिऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५१०॥

दूरश्रवणत्व बुद्धि ऋद्धिधर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः दूरश्रवणत्व बुद्धिऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५११॥

दूरदर्शित्व बुद्धि ऋद्धिधर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः दूरदर्शित्व बुद्धिऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५१२॥

दशपूर्वित्व बुद्धि ऋद्धिधर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः दशपूर्वित्व बुद्धिऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५१३॥

चौदह पूर्वित्व बुद्धि ऋद्धिधर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः चतुर्दशपूर्वित्व बुद्धिऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५१४॥

अष्टांगमहानिमित्त बुद्धि ऋद्धिधर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः अष्टांग महानिमित्त बुद्धिऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५१५॥

प्रज्ञाश्रमणत्व बुद्धि ऋद्धिधर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः प्रज्ञाश्रमणत्व बुद्धिऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५१६॥

पूज्य प्रत्येक बुद्धि ऋद्धिधर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः प्रत्येक बुद्धिऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५१७॥

श्रेष्ठ वादित्व बुद्धि ऋद्धिधर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः वादित्व बुद्धिऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५१८॥

अणिमा विक्रिया बुद्धि ऋद्धिधर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः अणिमा-विक्रिया बुद्धिऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५१९॥

महिमा विक्रिया बुद्धि ऋद्धिधर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः महिमा-विक्रिया बुद्धिऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५२०॥

लघिमा विक्रिया बुद्धि ऋद्धिधर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः लघिमा-विक्रिया बुद्धिऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५२१॥

गरिमा विक्रिया बुद्धि ऋद्धिधर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः गरिमा-विक्रिया बुद्धिऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५२२॥

प्राप्ति विक्रिया बुद्धि ऋद्धिधर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः प्राप्ति-विक्रिया बुद्धिऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५२३॥

प्राकाम्य विक्रिया ऋद्धिधर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः प्राकाम्य-विक्रिया ऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५२४॥

ईशत्वविक्रिया ऋद्धिधर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः ईशत्व-विक्रिया ऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५२५॥

शुभ वशित्वविक्रिया ऋद्धिधर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः वशित्व-विक्रिया ऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५२६॥

अप्रतिघातविक्रिया बुद्धि ऋद्धिधर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः अप्रतिघात-विक्रिया ऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५२७॥

अन्तर्धानविक्रिया बुद्धि ऋद्धिधर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः अन्तर्धान-विक्रिया ऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५२८॥

कामरूपित्वविक्रिया ऋद्धिधर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः कामरूपित्व-विक्रिया ऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५२९॥

नभतल गामित्व चारणऋद्धिधर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः नभस्तलगामित्व चारणक्रिया ऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५३०॥

जो जल चारण क्रिया ऋद्धिधर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः जलचारणक्रिया ऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५३१॥

जंघाचारण क्रिया ऋद्धिधर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः जंघाचारणक्रिया ऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५३२॥

फलादि चारण क्रिया ऋद्धिधर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः फल-पुष्प-पत्र चारणक्रिया ऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५३३॥

अग्नि धूम चारण ऋद्धिधर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः अग्नि धूम चारणक्रिया ऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५३४॥

मेघ धारा चारण ऋद्धिधर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः मेघधारा चारणक्रिया ऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५३५॥

तन्तू चारण क्रिया ऋद्धिधर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः तन्तुचारणक्रिया ऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५३६॥

ज्योतिश्चारण क्रिया ऋद्धिधर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः ज्योतिश्चारण क्रिया ऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५३७॥

मारुच्चारण क्रिया ऋद्धिधर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः मारुच्चारण क्रिया ऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५३८॥

पूज्य उग्र तप ऋद्धि धारकर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः उग्रतप ऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५३९॥

पूज्य दीप्तितप ऋद्धि धारकर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः दीप्तितप ऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५४०॥

पूज्य तप्त तप ऋद्धि धारकर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः तप्ततप ऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५४१॥

पूज्य महातप ऋद्धि धारकर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः महातप ऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५४२॥

पूज्य घोर तपऋद्धि धारकर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः घोरतप ऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५४३॥

घोरपराक्रम ऋद्धि धारकर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः घोरपराक्रमतप ऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५४४॥

अघोर ब्रह्मचारित्व ऋद्धिधर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः अघोरब्रह्म चारित्व तपऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५४५॥

श्रेष्ठ मनोबल ऋद्धिधारकर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः मनोबल ऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५४६॥

श्रेष्ठ वचनबल ऋद्धि धारकर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः वचनबल ऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५४७॥

श्रेष्ठ कायबल ऋद्धि धारकर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः कायबल ऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५४८॥

ऋद्धि धार आमर्श औषधी, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः आमर्शौषधि ऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५४९॥

खेल्ल-औषधी ऋद्धि धारकर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः खेल्लौषधि ऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५५०॥

जल्ल-औषधी ऋद्धि धारकर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः जल्लौषधि ऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५५१॥

जो मल-औषधऋद्धि धारकर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः मलौषधि ऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५५२॥

विप्रुष-औषध ऋद्धि धारकर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः विप्रुषौषधि ऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५५३॥

सर्व औषधी ऋद्धि धारकर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः सर्वौषधि ऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५५४॥

ऋद्धि धार मुखनिर्विष-औषध, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः मुखनिर्विषौषधि ऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५५५॥

दृष्टी निर्विष ऋद्धि धारकर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः दृष्टिर्निर्विष ऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५५६॥

जो आशीर्विष ऋद्धि धारकर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः आशीर्विष ऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५५७॥

श्रेष्ठ दृष्टिविष ऋद्धि धारकर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः दृष्टिर्विष ऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५५८॥

क्षीरस्त्राविरस ऋद्धि धारकर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः क्षीरस्त्रावि रस ऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५५९॥

मधुस्त्रावी रस ऋद्धि धारकर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः मधुस्त्रावि रस ऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५६०॥

अमृत स्त्राविरस ऋद्धि धारकर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः अमृतस्त्रावि रस ऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५६१॥

सर्पिस्त्रावि रस ऋद्धि धारकर, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः सर्पिस्त्रावि रस ऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५६२॥

ऋद्धि धार अक्षीण महानस, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः अक्षीणमहानस ऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५६३॥

ऋद्धिधार अक्षीण महालय, संत बने ध्यानी।
उन ऋषिवर को नमन हमारा, जो जग कल्याणी॥

ॐ ह्रः अक्षीणमहालय ऋद्धिधारी मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५६४॥

कुंदकुंद के प्रतिरूप जो, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः कुंदकुंदरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५६५॥

उमास्वामि धरसेन रूप जो, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः उमास्वामि-धरसेनरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५६६॥

पुष्पदंत गुरु भूतबली जो, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः पुष्पदंत-भूतबलीरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५६७॥

शांति-वीर-शिव-ज्ञान रूप जो, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः शांतिवीरशिवज्ञानरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५६८॥

विद्या गुरुवर मोक्षमार्ग के, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः विद्यारूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५६९॥

समय समय से समय समय पर, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः समयरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५७०॥

रोग भोग तज योग रूप जो, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः योगरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५७१॥

संयमधारी नियमवान बन, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः नियमरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५७२॥

चिदानंदमय चेतन रूपी संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः चेतनरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५७३॥

होम हवन कर ओम स्वरूपी, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः ओमरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५७४॥

क्षमा धारकर धरती जैसे, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः क्षमारूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५७५॥

गुप्ति धारकर गुप्ति रूप जो, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः गुप्तिरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५७६॥

त्याग असंयम धरकर संयम, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः संयमरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५७७॥

ज्ञान सुधा से सुधा रूप जो, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः सुधारूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५७८॥

समता धरकर ममता हरने, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः समतारूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५७९॥

विभाव त्याग स्वभाव रूप में, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः स्वभावरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५८०॥

अंतिम धर्म समाधि रूप में, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः समाधिरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५८१॥

सुख पाने को सरल रूप में, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः सरलरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५८२॥

धरकर जो वैराग्य रूप में, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः वैराग्यरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५८३॥

जिनशासन के प्रमाण रूपी, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः प्रमाणरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५८४॥

त्याग कुटिलता आर्जव रूपी, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः आर्जवरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५८५॥

त्याग कठिनता मार्दव रूपी, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः मार्दवरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५८६॥

अपनी आतम पवित्र करने, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः पवित्ररूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५८७॥

जग में उत्तम धरम पालकर, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः उत्तमरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५८८॥

चिन्मय अपने तत्त्व प्राप्ति को, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः चिन्मयरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५८९॥

आतम सावन पाने पावन, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः पावनरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५९०॥

त्याग सकल दुख सुख रूपी जो, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः सुखरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५९१॥

पूज्य अपूर्व रूप पाने को, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः अपूर्वरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५८२॥

सदा प्रशांत रूप रखने को, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः प्रशांतरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५९३॥

वेग त्याग निर्वेग **रूप जो, संत बने आहा।**
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः निर्वेगरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५९४॥

पाने मोक्ष विनीत **रूप में, संत बने आहा।**
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः विनीतरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५९५॥

पाप तजे सम्यक् निर्णय कर, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः निर्णयरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५९६॥

बोधितबुद्ध प्रबुद्ध रूप में, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः प्रबुद्धरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५९७॥

प्रवचन रूप सार पाने को, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः प्रवचनरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५९८॥

पुण्य-फला अर्हंता बनने, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः पुण्यरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥५९९॥

पाप त्यागने पाय रूप जो, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः पायरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६००॥

प्रभु-प्रसाद से गुरु -प्रसाद जो, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः प्रसादरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६०१॥

अभय दान फल अभय रूप में, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः अभयरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६०२॥

अक्षय वैभव पाने अक्षय, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः अक्षयरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६०३॥

पथ प्रशस्त कर प्रशस्त रूपी, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः प्रशस्तरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६०४॥

शास्त्र पुराण ग्रंथ में रमने, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः पुराणरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६०५॥

भव प्रयोग तज प्रयोग रूपी, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः प्रयोगरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६०६॥

आतम शोध प्रबोध स्वरूपी, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः प्रबोधरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६०७॥

प्रणम्य शुद्ध चेतना पाने, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः प्रणम्यरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६०८॥

सूर्य सरीखा प्रभात पाने, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः प्रभातरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६०९॥

चंदा जैसे चंदा रूपी, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः चन्द्ररूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६१०॥

वृषभ धर्ममय वृषभ स्वरूपी, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः वृषभरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६११॥

मोह जीतने अजित स्वरूपी, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः अजितरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६१२॥

कार्य असंभव संभव करने, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः संभवरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६१३॥

निज का अभिनंदन करने को, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः अभिनन्दनरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६१४॥

कुगति त्यागने सुमति धारने, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः सुमतिरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६१५॥

अपना आतम पद्म खिलाने, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः पद्मरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६१६॥

सुपार्श्व प्रभु जैसे बनने को, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः सुपार्श्वरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६१७॥

आतम दाग चंद्रप्रभ हरने, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः चन्द्रप्रभरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६१८॥

पुष्पदंत सम मंत्र धारने, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः पुष्पदन्तरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६१९॥

जल चन्दन हिमगिरि से शीतल, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः शीतलरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६२०॥

जो श्रेयांस रूप होने को, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः श्रेयांशरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६२१॥

जगतपूज्य से आत्म-पूज्य को, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः पूज्यरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६२२॥

विमल रूप चैतन्य प्राप्ति को, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः विमलरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६२३॥

अनन्त गुणी आतमा पाने, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः अनन्तरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६२४॥

धर्म बिना कुछ नहीं जगत् में, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः धर्मरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६२५॥

क्लांति भ्रांति को शांति शांति से, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः शान्तिरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६२६॥

सुख दुख में जो कुन्थु रूप हो, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः कुन्थुरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६२७॥

तरह-तरह ही अरह रूप हो, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः अरहरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६२८॥

मोह सल्ल को हरने मल्लि, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः मल्लिरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६२९॥

अपने सब व्रत सुव्रत करने, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः सुव्रतरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६३०॥

पत्थर में नमि परमेश्वर को, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः नमिरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६३१॥

नेमि बिना ना चले धर्म रथ, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः नेमिरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६३२॥

गुरु का पा रस पारस बनने, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः पार्श्वरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६३३॥

वीर बनें महावीर तभी तो, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः वीररूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६३४॥

क्षीर गुणों में पीर हरण को, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः क्षीररूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६३५॥

धीरज धरने धीर रूप में, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः धीररूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६३६॥

शमन कषायें करने उपशम, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः उपशमरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६३७॥

प्रशम भाव को धरें प्रशम सो, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः प्रशमरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६३८॥

आगममय चर्या करने को, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः आगमरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६३९॥

महा महाव्रत महाधाम को, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः महारूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६४०॥

मिले विराट चेतना इससे, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः विराटरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६४१॥

मोक्ष विशाल रूप पाने को, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः विशालरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६४२॥

शैल शिखर मुक्ति का पाने, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः शैलरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६४३॥

मिले मोक्ष का अचल रूप सो, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः अचलरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६४४॥

मिले पुनीत मीत चेतन सो, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः पुनीतरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६४५॥

वैरागी वैराग्य धारने, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः वैराग्यरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६४६॥

अविचल योग साधना करने, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः अविचलरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६४७॥

विशद विचारों की भू पाने, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः विशदरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६४८॥

शुक्ल धवल उज्ज्वल निज पाने, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः धवलरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६४९॥

सौम्य रूप जिन मुद्रा पाने, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः सौम्यरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६५०॥

अनुभव की गागर को पाने, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः अनुभवरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६५१॥

दुर्लभ का दुर्लभ धन पाने, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः दुर्लभरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६५२॥

बनें विनम्र विजय पाने को, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः विनम्ररूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६५३॥

अतुलनीय पद मिले अतुल सो, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः अतुलरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६५४॥

भावों का सब खेल जगत में, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः भावरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६५५॥

आतम का आनंद मिले सो, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः आनंदरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६५६॥

गम को नहीं अगम्य रूप को, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः अगम्यरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६५७॥

सहज छोड़कर जगत विभूती, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः सहजरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६५८॥

स्वार्थ त्याग निःस्वार्थ रूप को, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः निःस्वार्थरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६५९॥

दोष रहित निर्दोष बनें सो, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः निर्दोषरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६६०॥

लोभ त्याग निर्लोभ बनें सो, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः निर्लोभरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६६१॥

रोग रहित नीरोग बनें सो, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः नीरोगरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६६२॥

मोह रहित निर्मोह बनें सो, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः निर्मोहरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६६३॥

पक्ष नहीं निष्पक्ष रूप को, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः निष्पक्षरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६६४॥

जग की ममता तजने निस्पृह, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः निस्पृहरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६६५॥

अचल मेरु सम निश्चल बनने, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः निश्चलरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६६६॥

कंप नहीं निष्कंप बनें सो, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः निष्कंपरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६६७॥

हों निष्पंद द्वंद सब तजने, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः निष्पंदरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६६८॥

करने आतम स्वस्थ निरामय, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः निरामयरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६६९॥

आपद नहीं निरापद बनने, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः निरापदरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६७०॥

आकुल नहीं निराकुल होने, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः निराकुलरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६७१॥

उपमातीत निरुपम बनने, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः निरुपमरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६७२॥

काम त्याग निष्काम बनें सो, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः निष्कामरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६७३॥

जगत आश तज निरीह बनने, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः निरीहरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६७४॥

सीमा तज निस्सीम रूप में, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः निस्सीमरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६७५॥

भय तजने निर्भीक रूप में, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः निर्भीकरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६७६॥

वीतराग नीराग बनें सो, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः नीरागरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६७७॥

तजें कर्म रस सो नीरज जी, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः नीरजरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६७८॥

कर्म कलंक निकलंक त्यागने, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः निकलंकरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६७९॥

तजें आत्मद निर्मद बनने, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः निर्मदरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६८०॥

तज उपसर्ग निसर्ग रूप में, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः निसर्गरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६८१॥

संग त्याग निःसंग रूप में, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः निःसंगरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६८२॥

शीतल धाम मिले सो शीतल, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः शीतलरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६८३॥

निज को भाश्वत करने शाश्वत, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः शाश्वतरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६८४॥

अरस जगत को तजने समरस, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः समरसरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६८५॥

जगत भ्रमण को तजें श्रमण सो, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः श्रमणरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६८६॥

आतम के संधान ज्ञान को, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः संधानरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६८७॥

ओम ओम ओंकार रूप में, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः ओंकाररूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६८८॥

मोक्ष रूप संस्कार प्राप्ति को, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः संस्काररूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६८९॥

ग्रंथ त्याग निर्ग्रंथ रूप में, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः निर्ग्रंथरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६९०॥

भ्रांति त्याग निर्भ्रांत रूप में, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः निर्भ्रांतरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६९१॥

आलस त्याग निरालस बनने, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः निरालसरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६९२॥

आस्रव त्याग निरास्रव बनने, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः निरास्रवरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६९३॥

निराकार हों निराकार सो, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः निराकाररूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६९४॥

चिंता तज निश्चिंत बनें सो, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः निश्चिंतरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६९५॥

मोक्ष महल निर्माण हेतु ही, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः निर्माणरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६९६॥

हों निःशंक तजें शंका सो, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः निःशंकरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६९७॥

अंजन त्याग निरंजन बनने, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः निरंजनरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६९८॥

लेप त्याग निर्लेप बनें सो, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः निर्लेपरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥६९९॥

विद्या पथ उत्कृष्ट मिले सो, संत बने आहा।
उन मुनिवर को अर्घ्य चढ़ाकर, हो नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रः उत्कृष्टरूप मुनीन्द्राय अर्घ्यं...॥७००॥

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

बन्धन का क्रन्दन हरे, रक्षाबन्धन पर्व।
भाव भक्ति से वह कथा, कहें मिले सुख सर्व॥

(सुविद्या)

उज्जयिनी में श्री धर्मा के, मूढ़ी मंत्री चार।
राज्य भार का काम सँभाले, राजा सहित विचार॥
कभी सात सौ मुनियों वाला, करता संघ विहार।
उज्जयिनी बाहर उपवन में, हुआ विराजित सार॥१॥

मुनि वन्दन को प्रजा गयी तो, पूछा हेतु नरेश।
मंत्री बोला ढोंगी मुनिजन, ये मानें परमेश॥
मंत्री रोके फिर भी राजा, गये किये मुनि दर्श।
गुरु-आज्ञा से मौन संघ लख, नृप पाये ना हर्ष॥२॥
राजा मंत्री जब लौटे तब, पथ में हुआ विवाद।
श्रुतसागर ने राजा मंत्री, जीते कर संवाद॥
गुरु ने घटना को सुन मुनि को, दीना प्रतिमा योग।
वहीं रात में घातक मंत्री, कीलित सहे वियोग॥३॥
पहुँचे मंत्री हस्तिनागपुर, राज्य पद्म के धाम।
राजा का उपकार किया तो, पाये थे वरदान॥
वहीं अकंपन गुरु ने कीना, ससंघ वर्षायोग।
मंत्री ने वर माँग संघ पर, किया उपद्रव रोग॥४॥
जब उपसर्ग हटेगा तब मुनि, आसन छोड़े ध्यान।
हो मजबूर पद्म राजा जी, कर न सके सम्मान॥
तभी विष्णुकुमार के गुरु ने, अवधिज्ञान से ज्ञान।
पुष्पदन्त क्षुल्लक से बोले, दया सहित कुछ वान॥५॥
यह उपसर्ग विष्णुकुमार जी, टाल सकेंगे शीघ्र।
क्षुल्लकजी ने पहुँच वहाँ पर, कथा सुनायी शीघ्र॥
जान विक्रिया मुझको है वह, अग्र बढ़ाया हाथ।
चले विष्णुकुमार निश्चय कर, दिये पदम को डाँट॥६॥
राजा बोला मैं परवश हूँ, करिए आप उपाय।
शीघ्र संघ उपसर्ग मुक्त हो, होवे धर्म सहाय॥
तब उपसर्ग धाम पर विष्णू, पहुँच याचना कीन।
मंत्री हाँ बोले तो माँगी, धरती बस पग तीन॥७॥
किए विक्रिया तो तन पहुँचा, ज्योतिष्पटल समीप।
एक कदम मेरू पर दूजा, मानूषोत्तर शीश।
तीजा नभ में नाँच रहा तो, मचा जगत में क्षोभ।
महाजनों ने शान्त कराया, सूझ-बूझ से क्षोभ॥८॥

देवों ने उपसर्ग दूर कर, मंत्री बलि को बाँध।
जिनशासन वात्सल्यपर्व का, करके जयजय नाद॥
दूर हुआ उपसर्ग जानकर, संघ तजा निज ध्यान।
दे आहार संघ की सेवा,श्रावक किए महान॥ ९॥
गये विष्णुकुमार मुनिवरजी, अपने गुरु के पास।
प्रायश्चित ले शल्य विक्रिया, छोड़ी धर संन्यास॥
श्रावण शुक्ल पूर्णिमा का दिन, तब से है विख्यात।
रक्षाबन्धन पर्व सलूना, 'सुव्रत' सदा मनात॥१०॥

ॐ ह्रूं श्री विष्णुकुमार एवं अकंपनाचार्यादि सप्तशतक मुनिसमूहेभ्यः समुच्चय जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

सम्यग्दर्शन शुद्धि को, ध्याओ यह त्यौहार।
पुण्य बढ़ाकर कीजिए, जिनशासन जयकार॥
मल्लिनाथ के बाद में, मुनिसुव्रत के पूर्व।
महापद्म चक्रेश के, कालिक कथा अपूर्व॥

(पुष्पाञ्जलिं...)

प्रशस्ति

रामटेक में शान्तिप्रभु, विद्या गुरु पदधाम।
रक्षाबन्धन पर्व का, 'सुव्रत' लिखे विधान॥
दो हजार सन् आठ में, तारिख जब छब्बीस।
मास जुलाई शनि दिवस, पूर्ण सलूना गीत॥

(इति शुभं भूयात्)

॥ इति रक्षाबन्धन विधान संपूर्णम् ॥

वात्सल्य में रत रहे, विष्णुकुमार महंत।
सबको जागृत कर गए, श्रावक हो या संत॥

डोली में बेटी, सबको ही चाहिए, गोदी में नहीं

जाकर आते हैं

(भजन-स्तुति)

जाकर आते हैं, भगवन! जाकर आते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥
सदा आपके चरणों में हम, रहना तो चाहें।
किन्तु पाप की मजबूरी से, हम ना रह पाएँ॥
पाप घटाने पुण्य बढ़ाने, फिर से आते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥१॥
दुनियाँ हमें कभी ना रुचती, इसे छोड़ना हैं।
माया ममता के हर बंधन, हमें तोड़ना है॥
सदा आपके साथ रहें ये, भाव बनाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥२॥
यह आना-जाना भगवन् अब, हमें न करना है।
सदा आपकी छत्र-छाँव में, अब तो रहना है॥
जीते मरते हरदम 'सुव्रत', भूल न पाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥३॥
दर्शन बिना आपके प्रभु हम, चैन न पाएंगे।
बिना आपके नयन हमारे, आँसु बहाएंगे॥
बिन माता के बच्चे जैसे, रह ना पाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥४॥
चंदा बिना चकोरों को ज्यों, कितनी पीड़ा हो।
बिना स्वाति की बूँदों जैसे, दुखी पपीहा हो॥
मिट्ठू-मिट्ठू जैसी रटना, भक्त लगाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥५॥
सदा आपके दर्शन पाएँ, यही भावना है।
चरणों में स्थान मिले बस, यही प्रार्थना है॥
अपने जैसा हमें बना लो, आश लगाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥६॥

===